بسم الله الرحمن الرحيم

لا إله إلا الله محمد رسول الله

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[स०] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 24
Issue - 06

राह-ए-ईमान

जून
2022 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.

संपादक - मंडल
फज़ल नासिर

सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य

टाइटल डिज़ाइन
इब्नुल मेहदी लईक M.A.

मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.

कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

विषय सूचि

1. पवित्र क़ुरआन.. 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी................................ 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (तजल्लियात-ए-इलाहिया अर्थात ख़ुदा की चमकारें).............4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 6.5.2022)..8
7. क़ुरआन-ए-मजीद की 26 आयतों पर आरोपों के उत्तर...........................12
8. मानवता की सेवा और जमाअत अहमदिया...22
9. सिलसिला अहमदिया भाग-31...25
10. सामान्य ज्ञान...28
11. पत्रिका के बारे में कृपया अपना फीडबैक (प्रतिक्रिया) अवश्य दें.............32

☆ ☆ ☆

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्यः 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

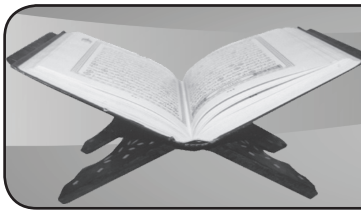

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

زَعَمَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اَنۡ لَّنۡ يُّبۡعَثُوۡا ؕ قُلۡ بَلٰى وَرَبِّىۡ لَتُبۡعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلۡتُمۡ ؕ
وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيۡرٌ‏. فَاٰمِنُوۡا بِاللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ وَالنُّوۡرِ الَّذِىۡۤ اَنۡزَلۡنَا ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ
خَبِيۡرٌ‏. (سوره التغابن - ٨-٩)

अनुवाद: इनकार करने वाले गुमान करते हैं कि उन्हें (मरने के बाद) उठाया नहीं जाएगा। तू कह दे, 'क्यों नहीं, मेरे रब के द्वारा, तुम निश्चय ही उठाए जाओगे; तब जो कुछ तुम ने किया, उसकी खबर तुम्हें दी जाएगी। और यह अल्लाह के लिए आसान है। इसलिए ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर, और उस नूर पर जिसे हमने उतारा है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे अच्छी तरह परिचित है। (सूर: तग़ाबुन 8-9)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत अबु हुरैरह (रज़ि) वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बताया कि अल्लाह तआला फरमाता है मेरा बन्दा मेरा इंकार करता है हालांकि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए। वह मुझे गाली देता है हालांकि उसे ऐसा करने का अधिकार नहीं था। मेरा इंकार करने का अर्थ यह है कि वह कहता है अल्लाह तआला फिर हमें इस तरह पैदा नहीं कर सकता जिस तरह उसने हमें पहले पैदा किया है और मुझे गाली देने का अर्थ है कि वह कहता है अल्लाह तआला ने किसी को अपना बेटा बना लिया है हालांकि मेरी ज़ात 'समद' अर्थात बेनियाज़ है और न मेरा कोई बेटा है और न मैं पैदा किया गया हूँ अर्थात् न किसी का बेटा हूँ और न ही कोई मेरे बराबर हो सकता है।" (मुस्नद अहमद भाग 2 पृष्ठ 317)

अनुवाद: हज़रत अबु हुरैरा (रज़ि) वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: अल्लाह तआला ने आदम को अपने रूप पर बनाया है। अर्थात् इंसान अल्लाह तआला की विशेषताओं का सूचक बनने की क्षमता रखता है और उसमें यह क्षमता है कि वह अल्लाह तआला की विशेषताओं को ज़िल्ली रूप में अपना सके। (मुस्नद अहमद भाग 2 पृष्ठ 323)

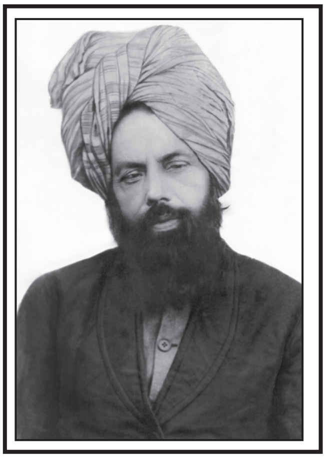

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

मौत को याद रखो

"अफ़सोस उसको मौत याद नहीं। मौत क्या दूर है? जिसकी 50 वर्ष की उम्र हो चुकी है। यदि वह ज़िन्दगी पा ले तो दो-चार वर्ष और पा लेगा या ज़्यादा से ज्यादा 10 वर्ष। अंततः मरना होगा। मौत आना एक पक्की बात है जिससे कदापि कोई नहीं बच सकता। मैं देखता हूं कि लोग रुपया-पैसा के हिसाब में ऐसे परेशान रहते हैं कि कोई सीमा नहीं मगर उम्र का हिसाब कभी भी नहीं करते। अभागा है वह इन्सान जिसको उम्र के हिसाब-किताब की ओर ध्यान नहीं। सबसे ज़रूरी और हिसाब के लायक जो चीज़ है वह उम्र ही तो है। ऐसा न हो कि मौत आ जाए और यह हसरत लेकर दुनिया से जाए। क़ुरआन शरीफ़ से साबित होता है कि जिस तरह जन्नत की ज़िन्दगी इसी दुनिया से शुरू हो जाती है उसी तरह दोज़ख़ की ज़िन्दगी भी यहीं से ही शुरू हो जाती है। जब इन्सान हसरत के साथ मरता है तो बहुत बड़े नर्क में होता है, जब देखता है कि अब चला। हैज़ा, प्लेग, बुखार, धड़कन या किसी और बीमारी में ग्रस्त होता है तो मौत से पहले एक मौत आ जाती है जो दिल और रूह को कमज़ोर कर देती है और वह भी एक बड़ी हसरत की होती है। बहुत से रोग ऐसे हैं कि दो मिनट भी दम लेने नहीं देते और झटपट काम तमाम कर देते हैं। जिसने एक दिन भी पढ़ा कि मैं मरने वाला प्राणी हूं वह उस आज़ाब से बचने की फ़िक्र में लग गया जो इन्सान को हसरत के रंग में खा जाता है।

हमारे क़रीबी रिश्तेदारों में से एक की आंतों में अचानक सख़्त दर्द हुआ और पेशाब बंद हो कर काले रंग की एक उल्टी हुई और उसके साथ ही गर्दन लटक गई। **उस पल उसने कहा कि अब मालूम हुआ कि दुनिया कुछ चीज़ नहीं। कौन कह सकता है कि हम सब जो इस समय यहां मौजूद हैं अगले साल भी जरूर होंगे। हमारे बहुत से मित्र जो पिछले साल मौजूद थे आज नहीं हैं। उन्हें क्या मालूम था कि अगले साल हम न होंगे। और किसको मालूम है कि मरने वालों की सूची में किस-किस का नाम है।** इसलिए बड़ा ही मूर्ख और नादान है वह आदमी जो मरने से पहले ख़ुदा से सुलह नहीं करता और झूठी बिरादरी को नहीं छोड़ता।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द - 2)

☆ ☆ ☆

रूहानी ख़ज़ायन

तजल्लियात-ए-इलाहिया (ख़ुदाई चमकारें)

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

यह तो संभव है कि ख़ुदा के कलाम के अर्थ करने में कुछ अवसरों में एक समय तक मुझ से कोई ग़लती हो जाए परन्तु यह संभव नहीं कि मैं सन्देह करूं कि वह ख़ुदा का कलाम नहीं। और चूंकि मेरे नज़दीक नबी उसको कहते हैं जिस पर ख़ुदा का यक़ीनी और अटल कलाम बड़ी प्रचुरता से उतरे, जो ग़ैब (परोक्ष) पर आधारित हो। इसलिए ख़ुदा ने मेरा नाम नबी रखा परन्तु बिना शरीअत के। शरीअत का ग्रहण करने वाला क़यामत तक पवित्र क़ुर्आन है। तो वह ख़ुदा का कलाम जो मुझ पर उतरता है अपने अन्दर एक विलक्षण हालत रखता है और अपनी प्रकाशमान किरणों से अपना चेहरा दिखलाता है वह फ़ौलादी मेख़ (कील) की तरह दिल के अन्दर धंस जाता है और अपनी रूहानी शक्तियों के साथ मुझे भर देता है। वह रुचिकर, सरस और आरामदायक है और अपने अन्दर एक ख़ुदाई रोब रखता है और ग़ैब के वर्णन करने में कंजूस नहीं अपितु ग़ैब की नहरें उसमें चल रही हैं, परन्तु हमारे कुछ विरोधी जो इल्हाम का दावा करते हैं प्रथम तो ये ग़ैबी मौजें और ख़ुदा के भेदों का एक दरिया उनके इल्हामों में नहीं तथा ख़ुदाई शक्ति और वैभव उनको छू कर भी नहीं गया। इसके अतिरिक्त वे स्वयं इस बात को मानते हैं कि उन्हें मालूम नहीं कि यह इल्हाम उनके रहमानी हैं या शैतानी हैं इसी कारण से उन की सामान्य आस्था है कि उनके इल्हाम काल्पनिक बातों में से हैं। नहीं कह सकते कि ऐसे इल्क़ा ख़ुदा की ओर से हैं या शैतान की, ऐसे इल्हामों पर गर्व करना शर्म का स्थान हैं जिन में इतनी भी चमक नहीं जिस से पता लग सके कि वे अवश्य ख़ुदा की ओर से हैं न कि शैतान की ओर से। ख़ुदा पवित्र है और शैतान अपवित्र है। अत: ये विचित्र इल्हाम हैं कि इन से कुछ मालूम नहीं होता कि ये पवित्र झरने से निकले हैं या अपवित्र झरने से। और दूसरा संकट यह है कि यदि कोई किसी इल्हाम को ख़ुदा का इल्हाम समझ कर उस का पाबन्द हुआ और वास्तव में वह शैतान का इल्हाम हो तो वह तो तबाह हो गया और यदि शैतान का इल्हाम समझ कर ख़ुदा के इल्हाम का पाबन्द न हुआ तो वह भी तबाही के गढ़े में गिरा तो ये इल्हाम क्या हुए? एक भयानक संकट हुआ, जिसका अंजाम मौत है और यह इस्लाम पर भी एक दाग़ है। बनी इस्राईल में तो ऐसे यक़ीनी इल्हाम होते थे जिन के कारण हज़रत मूसा[अ.] की मां ने अपने मासूम बच्चे को दरिया में डाल दिया और उस इल्हाम की सच्चाई में कुछ सन्देह न किया और काल्पनिक न समझा। ख़िज़्र ने एक बच्चे को क़त्ल भी कर दिया। परन्तु इस दयनीय उम्मत को वह श्रेणी भी न मिली जो बनी इस्राईल की स्त्रियों को मिल गई। फिर इस आयत के क्या मायने हुए कि صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ (अलफ़ातिहा) क्या इन्हीं काल्पनिक इल्हामों का नाम इनाम है जो शैतान और रहमान के बीच मिले जुले हैं। शर्म आनी चाहिए।

उपरोक्त प्रश्न का दूसरा उत्तर यह है कि छोटी-छोटी घटनाओं की भविष्यवाणियां यद्यपि कि ख़ुदा

के मुर्सलों की सच्चाई की वे भी एक पर्याप्त दलील हैं क्योंकि मात्रा और गुणवत्ता की दृष्टि से उन भविष्यवाणियों में भी दूसरे लोग उन का मक़ाबला नहीं कर सकते, इसके बावजूद जिन लोगों पर वसवस: और भ्रम हावी हैं वे किसी न किसी भ्रम में गिरफ़्तार हो जाते हैं। उदाहरणतया यदि ख़ुदा के किसी मामूर की दुआ से किसी के घर में लड़का पैदा हो या वह मामूर लड़का पैदा होने की ख़बर दे और लड़का हो जाए तो बहुत से लोग कह उठते हैं कि यह कोई विशेष निशान नहीं। बहुत सी औरतों को भी अपने बारे में या पड़ोसी औरत के बारे में स्वप्न आ जाते हैं कि उसके घर में लड़का पैदा होगा और फिर लड़का पैदा भी हो जाता है तो क्या उस औरत को ख़ुदा का नबी या रसूल या मुहद्दिस मान लिया जाए? और यद्यपि ऐसे भ्रमों में ये लोग झूठे हैं परन्तु अशिष्टों की ज़ुबान कौन बन्द करे? और झूठे इसलिए हैं कि हम यह तो नहीं कहते कि किसी एक कथन और एक-दो घटना से किसी का ख़ुदा की ओर से होना सिद्ध हो जाता है ताकि प्रत्येक स्वप्न देखने वाला ख़ुदा का मनोनीत समझा जाए अपितु पहले दावा चाहिए फिर ऐसी भविष्यवाणियां चाहिएं जो अपनी-अपनी मात्रा और गुणवत्ता की दृष्टि से उस सीमा तक पहुंच चुकी हों कि जो सामान्य लोगों के स्वप्नों या इल्हामों की भागीदारी उनके साथ वर्जित हो जैसा कि ऐसी भविष्यवाणियां छोटी-छोटी घटनाओं के बारे में जो मेरे द्वारा ख़ुदा ने पूरी कीं उन की संख्या कई हज़ार तक पहुंचती है और कौन है जिसने संख्या और सफ़ाई की दृष्टि से उनका मुकाबला करके दिखाया। कुछ वर्ष हुए कि एक अभागे अनाड़ी ने ऐतराज़ किया था कि मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब जो इतनी निष्ठा रखते हैं उनके लड़के का निधन हो गया है। यह ऐतराज़ यद्यपि सर्वथा द्वेष और मूर्खता के कारण था क्योंकि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग्यारह लड़के मृत्यु को प्राप्त हुए थे। परन्तु मेरी दुआ पर ख़ुदा ने मुझ पर प्रकट किया कि मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब के घर में लड़का पैदा होगा और उसके शरीर पर फोड़े प्रकट हो जाएंगे ताकि यह इस बात की निशानी हो कि यह वही लड़का है जो दुआ से पैदा हुआ। तो ऐसा ही घटित हुआ और थोड़े ही दिनों के बाद मौलवी साहिब के घर में लड़का पैदा हुआ जिसका नाम अब्दुलहयी रखा गया और उस के जन्म के समय के क़रीब ही उसके शरीर पर बहुत से फोड़े निकल आए जिन के दाग़ अब तक मौजूद हैं। ये फोड़े ख़ुदा ने इसलिए उसके शरीर पर पैदा किए ताकि किसी को यह भ्रम न हो कि यह मामला संयोग से हुआ है दुआ का प्रभाव नहीं और और न इसको भविष्यवाणी पर ठोस तर्क है जैसा कि कभी ऐसा संयोग हो जाता है कि कुछ लोग किसी ऐसे ग़ायब दोस्त की चर्चा करते हैं कि वह इस समय आते तो अच्छा था और अभी वह चर्चा आरंभ ही होती है कि वह स्वयं ही आ जाते हैं। तब लोग कहते हैं आइए साहिब अभी हम आप की चर्चा ही कर रहे थे कि आप आ ही गए। अत: ख़ुदा ने इस भविष्यवाणी के साथ फोड़ों का निशान बता दिया ताकि मालूम हो कि वह लड़का दुआ के प्रभाव से पैदा हुआ है न कि संयोग से। ऐसे ही मेरे पास हज़ारों नमूने हैं परन्तु अफ़सोस मैं इस संक्षिप्त पुस्तक में उनका वर्णन नहीं कर सकता।...**शेष**

(तजल्लियात-ए-इलाहिया (ख़ुदाई चमकारें) पृष्ठ 23-26)

☆ ☆ ☆

सम्पादकीय समय के सुधारक की हस्तलिखित पुस्तकें

प्रिय पाठको संसार में वह समय बहुमूल्य होता है जब खुदा की ओर से कोई सुधारक आया हुआ हो क्योंकि उसकी कथनी-करनी समाज के लिए एक आदर्श होती है। आप जानते हैं कि हमारे हिन्दू समाज में श्री राम चंद्र जी महाराज को इसीलिए मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है क्योंकि उस समय में श्री राम चंद्र जी का आदर्श ही सर्वश्रेष्ठ था और आपने जो बातें कहीं उनको अपनाना आपके अनुयायियों के लिए आवश्यक था। इसी प्रकार जब भी कोई अवतार या सुधारक संसार में आता रहा वह अपने समय का आदर्श रहा। फिर जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम संसार में अवतरित हुए तो क़ुरआन के अनुसार आपका अस्तित्व भी समाज के लिए एक आदर्श था। आप ने क़ुरआन की शिक्षाओं के अनुसार पालन करके दिखाया और समाज के सम्मुख अपना आदर्श स्थापित किया। वर्तमान में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब को अल्लाह तआला ने सम्पूर्ण संसार के लिए सुधारक बना कर भेजा है क्योंकि आप हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रतिरूप हैं।

आपने समाज सुधार के लिए जहां एक ओर अपना उत्तम आदर्श प्रस्तुत किया वहीं दूसरी ओर लगभग 85 पुस्तकें लिखीं और और समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने के लिए या धर्मों में फैले आस्थागत दोषों के दूर करने संबंधी हर विषय पर विस्तार से लिखा है। यह हमारा सौभाग्य है कि समय के किसी सुधारक और अवतार की हस्तलिखित पुस्तकें हमारे पास मौजूद हैं वरना अनादि काल से संसार में जितने भी अवतार या सुधारक आए हैं किसी की अपने हाथ से लिखी हुई पुस्तकें सामान्य जनमानस को उपलब्ध नहीं हैं। आप सब से निवेदन है एक बार इन पुस्तकों का अध्ययन अवश्य करें। आपकी पुस्तकों से एक दो उपदेश पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता हूँ : आप फरमाते हैं:-

जवानी का ज़माना कैसे लाभदायक हो

इस में कुछ सन्देह नहीं कि यह ज़माना जो युवावस्था और जवानी का ज़माना है एक ऐसा ज़माना है कि तामसिक वृत्ति ने इस को रद्दी किया हुआ है, परन्तु यदि कोई लाभदायक दिन हैं तो यही हैं। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का मौखिक कथन क़ुरआन मजीद में मौजूद है

وَمَآ اُبَرِّئُ نَفۡسِیۡ ۚ اِنَّ النَّفۡسَ لَاَمَّارَۃٌۢ بِالسُّوۡٓءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّیۡ ؕ

अर्थात् मैं अपने नफ़्स को सही नहीं ठहरा सकता क्योंकि नफ़्से अम्मार: (तामसिक वृत्ति) बुराई की ओर प्रेरित करता है। इस की इस प्रकार की प्रेरणाओं से वही सुरक्षित रह सकता है जिस पर मेरा रब रहम करे। इस से ज्ञात होता है कि इस ज़माना की बुराईयों और भावनाओं से बचने के लिए केवल कोशिश ही शर्त नहीं अपितु दुआओं की बहुत बड़ी ज़रूरत है। केवल प्रत्यक्ष संयम ही (जो आदमी अपनी चेष्टा

एवं कोशिश से करता है।) लाभदायक नहीं होता जब तक ख़ुदा तआला की कृपा और दया साथ न हो और वास्तविकता तो यह है कि सच्चा संयम और तक़्वा तो है ही वही जो ख़ुदा की ओर से मिलता है अन्यथा क्या यह सच नहीं है कि बहुत से वस्त्र पूरे सफेद होते हैं और बावजूद सफेद होने के भी वह गन्दे हो सकते हैं। अत: इस प्रत्यक्ष संयम और पवित्रता का उदाहरण ऐसा ही है। फिर भी इस वास्तविक पवित्रता, वास्तविक संयम और शुद्धता की प्राप्ति के लिए आवश्यकता इस बात की है कि इसी जवानी और युवावस्था के ज़माना में इन्सान चेष्टा करे जबकि शरीर में ताक़त और शक्ति और दिल में एक उमंग और जोश होता है। इस ज़माना में कोशिश करना बुद्धिमान का काम है और अल्लाह तआला ने बुद्धि इसी लिए दी है।

पहले उपाय करो

इस उद्देश्य के प्राप्त करने के लिए जैसा कि मैं पहले कई बार वर्णन कर चुका हूँ पहले ज़रूरी है कि आदमी जान बूझ कर अपने आप को गुनाह के गढ़े में न डाले अन्यथा वह ज़रूर नष्ट होगा। जो आदमी जान बूझ कर कुमार्ग धारण करता है या कुएँ में गिरता है और ज़हर खाता है वह नि:सन्देह नष्ट होगा। ऐसा व्यक्ति न तो संसार के निकट दया के योग्य ठहर सकता है और न ख़ुदा तआला के निकट। इसलिए यह ज़रूरी और बहुत ज़रूरी है विशेषत: हमारी जमाअत के लिए (जिसका अल्लाह तआला आदर्श के रूप में चयन करता है और वह चाहता है कि आने वाली नस्लों के लिए एक आदर्श ठहरे) कि जहाँ तक सम्भव है बुरी संगत और बुरी आदतों से परहेज़ करें और स्वयं को नेकी की तरफ लगाएँ। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए जहाँ तक उपाय हो सकता है उपाय करना चाहिए और कोई कमी नहीं छोड़ना चाहिए।

याद रखो उपाय भी एक गुप्त इबादत है, इसको तुच्छ मत समझो। इसी से वह मार्ग खुलता है जो बुराइयों से मुक्ति पाने का मार्ग है। जो लोग बुराइयों से बचने की कोशिश और उपाय नहीं करते हैं वे मानो बुराइयों पर राज़ी हो जाते हैं और इस तरह से ख़ुदा तआला उन से अलग हो जाता है।

मैं सच कहता हूँ कि जब इन्सान नफ़्से अम्मारह: (तामसिक वृत्ति) के चुंगल में गिरफ़्तार होने के बावजूद भी कोशिशों में लगा रहता है तो उसका नफ़्से अम्मारह: ख़ुदा तआला के निकट नफ़्से लव्वामा (राजसिक वृत्ति) हो जाता है और ऐसा महत्वपूर्ण परिवर्तन पा लेता है कि या तो वह तामसिक था जो अभिशाप के योग्य था या उपाय और कोशिश करने से वही अभिशाप योग्य तामसिक वृत्ति राजसिक वृत्ति (नफ़्से लव्वामा) हो जाती है। जिसे वह सम्मान प्राप्त है कि ख़ुदा तआला भी उस की क़सम खाता है। यह कोई छोटा सम्मान नहीं। अत: वास्तविक संयम एवं पवित्रता प्राप्त करने के लिए प्रथम यह आवश्यक शर्त है कि जहाँ तक बस चले और सम्भव हो प्रयत्न करो, बुराई से बचने की कोशिश करो, बुरी आदतों और बुरी संगतों को त्याग दो, उन स्थानों को छोड़ दो जो इस प्रकार की प्रेरणाओं का कारण हो सकें। संसार में जितना उपाय का मार्ग खुला है उतनी कोशिश करो और इस से न थको न हटो।

(अल् हकम भाग-9 नम्बर 3 पृष्ठ 2 से 4 दिनांक 24 जनवरी 1905 ई.)

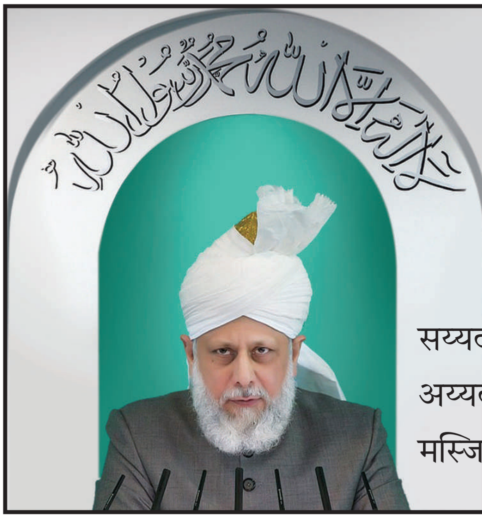

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 6.5.2022 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान स्तरीय ख़लीफ़-ए-राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के सद्गुणों का ईमान वर्धक वर्णन।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूर: फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर ख़लीफ़तुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. के बारे में पिछले ख़ुत्बों में जो वर्णन हुआ था सैनिक दल भिजवाने का, उनको कुछ विस्तार पूर्वक बयान करता हूँ ताकि उस समय की परिस्थितियों की जटिलता का भी कुछ अनुमान हो जाए।

गयारह सैन्य अभियानों में से पहले का सविस्तार वर्णन-

जैसा कि वर्णन हुआ था गयारह अभियान हुए उनमें से पहले का विस्तृत वर्णन कुछ यूँ है जो तुलेहा बिन ख़ुवैलिद, मालिक बिन नवेरा, सजाह पुत्री हारिस तथा मुसैलमा कज़्ज़ाब इत्यादि विद्रोही मुर्तदों (इस्लाम से विमुख) तथा झूठे नबियों का विनाश करने के लिए भेजा गया था। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. ने एक झंडा हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. के हवाले किया और आप रज़ी. को आदेश दिया कि तुलेहा बिन ख़ुवैलिद के मुक़ाबले के लिए जाएँ तथा उनसे निपट कर बुताह में मालिक बिन नुवेरा से लड़ें, यदि वे लड़ाई पर डटे हों तो फिर लडऩा है। एक रिवायत के अनुसार आप रज़ी. ने हज़रत साबित बिन क़ैस को अन्सार का अमीर नियुक्त किया तथा उन्हें हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. के आधीन करके हज़रत ख़ालिद रज़ी. को आदेश दिया कि वे तुलेहा तथा उयीना बिन हिस्न के मुक़ाबले पर जाएँ जो बनू असद के एक स्रोत पर ठहरे हुए थे।

अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार-

जब हज़रत अबू बकर रज़ी. ने इस्लाम से विमुख लोगों से युद्ध के लिए हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. के लिए झंडा बाँधा तो फ़रमाया! मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. अल्लाह का बहुत ही अच्छा बन्दा है और हमारा भाई है जो अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार है जिसे अल्लाह तआला ने काफ़िरों तथा मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) के विरुद्ध सोंता है। हज़रत अबू

बकर रज़ी. ने हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद को तुलेहा तथा उयीना की ओर भेजा, इन दोनों विरोधियों का संक्षिप्त परिचय भी पेश है।

धार्मिक पेशवा तुलैहा और उयीना दोनों विरोधियों का संक्षिप्त परिचय-

तुलैहा बिन ख़ुवैलद बिन नौफ़िल बिन नदला अलअसदी नबुव्वत के झूठे दावे करने वालों में से एक था जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन काल में अन्तिम दौर में प्रकट हुआ, आप स. के जीवन काल में ही इस्लाम से विमुखता का शिकार हुआ, नबुव्वत का दावा कर बैठा तथा समीरा नामक स्थान को अपना सैन्य अड्डा बनाया।

जब इसने दावा किया तो जनता इसकी अनुयायी हो गई, लोगों के पथभ्रष्ट होने का पहला कारण तो यह हुआ कि वह अपनी क़ौम के साथ एक यात्रा पर था, पानी समाप्त हो गया तो लोगों को बड़ी प्यास लगी, चालाकी दिखाते हुए उसने लोगों से कहा! तुम मेरे घोड़े एलाल पर सवार होकर कुछ मील दूर तक जाओ, वहाँ तुम्हें पानी मिलेगा। उन्होंने ऐसा ही किया तथा उन्हें पानी मिल गया। इस कारण से देहाती लोग इस फ़ितने का शिकार हो गए। इसकी असत्य बातों में से एक यह भी थी कि उसने नमाज़ में से सजदों को समाप्त कर दिया था तथा यह दावा था कि आसमान से उस पर वह्यी आती है तथा कविता एवं तुक बन्दी के साथ पदावली इबारतें वह्यी के रूप में पेश किया करता था। इतिहास से ज्ञात होता है कि इस्लाम से पहले के ज़माने में धार्मिक गुरु तुक बन्दी के साथ इबारतें लोगों के सामने पेश करके उन पर रौब बिठाते थे, तुलैहा भी काहिन था, तुलैहा असदी के अहंकार ने उसको धोखे में डाला।

उसका मसला ज़ोर पकड़ गया, उसकी शक्ति बढ़ी और जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उसके मामले की सूचना मिली तो आप स. ने ज़रार बिन आज़ूर असदी को उससे लडऩे के लिए भेजा किन्तु ज़रार के बस की बात नहीं थी, क्यूँकि समय के साथ साथ उसका प्रभाव बढ़ चुका था, विशेष रूप से असद तथा ग़तफ़ान दोनों मित्र क़बीलों के उस पर ईमान ले आने के बाद उसकी शक्ति और अधिक हो गई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निधन हो गया तथा तुलैहा के मामले का निबटारा न हुआ। जब ख़िलाफ़त की बाग डोर हज़रत अबू बकर रज़ी. ने संभाली तथा विद्रोही मुर्तदों को कुचलने के लिए सेना तय्यार की तथा प्रमुख नियुक्त किए तो उसकी ओर हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद के नेतृत्व में सेना भिजवाई। ये केवल इस्लाम से फिरे हुए लोग नहीं थे अथवा केवल नबुव्वत के दावेदार नहीं थे बल्कि ये मुसलमानों से युद्ध भी किया करते थे तथा उनको हानि पहुंचाने का प्रयास भी करते थे।

उयीना हिस्न कौन था?

यह मक्का पर विजय से पहले इस्लाम लाया, यह हुनैन तथा ताइफ़ की लड़ाई में भी सम्मिलित था, फिर सिद्दीक़ी दौर में विद्रोही मुर्तदों के साथ यह इस्लाम से विमुखता का शिकार हुआ तथा तुलैहा से प्रभावित हो गया, उसने बैअत कर ली, अतएव फिर बाद में इस्लाम की ओर भी लौट आया था।

जब अब्स, ज़ुबयान तथा उनके समर्थक बुज़ाख़ा नामक स्थान पर जमा हो गए तो तुलैहा ने बनू जदीला और गौस को जो कि क़बीला तै की दो शाखाएँ थीं, कहला भेजा कि तुम तुरन्त मेरे पास आ जाओ, अत: ऐसा ही

हुआ। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद को ज़ुलक़स्सा से रवाना करने से पहले अदी रज़ी. से कहा कि तुम अपनी क़ौम अर्थात क़बीला तै के पास जाओ, ऐसा न हो कि वे नष्ट हो जाएँ।

हज़रत अदी रज़ी. अपनी क़ौम के पास आए, उनको इस्लाम की दावत दी और चेतावनी दी। उन्होंने कहा- अबुल फ़सील (कुछ लोग अपमान तथा घृणा के कारण हज़रत अबू बकर रज़ी. को ऊँट के बच्चे का बाप कहते थे) का कदाचित आज्ञा पालन नहीं करेंगे। हज़रत अदी रज़ी. ने निर्दयी आक्र मणकारी सेना का आगे बढऩा, हत्या एवं विनाश के बाज़ार में अग्रसर होने तथा किसी को शरण न मिलने पर चेतावनी देने तथा समझाने के बाद कहा! फिर उस समय तुम हज़रत अबू बकर रज़ी. को फ़हलुल अकबर (हर एक पशु का नर) के उपनाम से याद करोगे। क़बीला तै के लोगों ने उनकी बातें सुनकर कहा कि अच्छा तुम इस हमला करने वाली सेना से जाकर मिलो तथा उसे हम पर हमला करने से रोको, यहाँ तक कि हम अपने इन साथियों को जो बज़ाख़ा में हैं वापस बुला लें। हमें आशंका है कि यदि हम तुलैहा का विरोध करेंगे, जबकि हमारे लोग उसके क़बज़े में हैं तो वह उन सबकी हत्या कर देगा अथवा उनको ज़मानत के रूप में बन्दी बना लेगा।

हज़रत अदी रज़ी. के हज़रत ख़ालिद रज़ी. को अपने क़बीले तै के दोबारा इस्लाम ले आने की सूचना देने तथा उपरोक्त पृष्ट भूमि में एक लेखक ने लिखा है कि- हज़रत अदी रज़ी. का यह महान कृत्य है कि उन्होंने अपनी क़ौम को इस्लामी सेना में शामिल होने का निमन्त्रण दिया।

बनू तै का ख़ालिद रज़ी. की सेना में शामिल होना दुश्मन की पहली हार थी क्यूँकि उनकी गणना अरब महाद्वीप के सशक्त क़बीलों में होती थी तथा अन्य क़बीले उनको महत्त्व देते थे।

तत्पश्चात हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने क़बीला जदेला के मुक़ाबले के विचार से अन्सर नामक स्थान की ओर पलायन किया, इस पर हज़रत अदी रज़ी. ने हज़रत ख़ालिद रज़ी. से कहा कि क़बीला तै का उदाहरण एक पक्षी की भांति है तथा क़बीला जदेला बनू तै की दो भुजाओं में से एक भुजा है। आप रज़ी. मुझे कुछ दिनों का समय दें, सम्भवत: अल्लाह तआला जदेला को भी सीधे रास्ते पर ले आए जिस प्रकार उसने $गौस अर्थात क़बीला तै की दूसरी शाखा को गुमराही से निकाल लिया है। अत: हज़रत अदी रज़ी. की निरन्तर बात चीत के परिणाम स्वरूप उन्होंने भी हज़रत अदी रज़ी. की बैअत की और आप रज़ी. क़बीला जदेला के एक हज़ार सवारों के साथ मुसलमानों के पास आ गए।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. क़बीला तै के इस्लाम क़बूल करने के बाद तुलैहा असदी की ओर रवाना हुए। आप रज़ी. ने हज़रत उकाशा रज़ी. बिन मुहसिन और हज़रत साबित रज़ी. बिन अक़रम को दुश्मन की ख़बर लाने के लिए आगे भेजा किन्तु दुश्मन ने इन दोनों ही को शहीद कर दिया। इस परिस्थिति के परिणाम में हज़रत ख़ालिद रज़ी. तुलैहा के मुक़ाबले के लिए अपनी सेना को संगठित करने लगे तथा बुज़ाख़ा नामक स्थान पर दोनों का मुक़ाबला हुआ तथा उन लोगों की हार हुई। तुलैहा अपने घोड़े पर सवार हुआ तथा अपनी पतनी को भी सवार किया फिर उसके साथ भाग गया तथा अपने साथियों से कहा कि तुममें से जो कोई भी इसका सामथ्र्य रखता हो, युद्ध के मैदान से दौड़ जाए। एक रिवायत के अनुसार तुलैहा युद्ध स्थल से भाग कर नक़्क़ा नामक स्थान पर बनू क़लब के पास जाकर ठहर गया तथा वहाँ जाकर इस्लाम ले आया।

फिर जब अल्लाह तआला ने बनू फ़ज़ारा और तुलैहा को करारी हार दी तो बनू आमिर, सुलीम तथा हवाज़िन नामक क़बीले यह कहते हुए आए कि जिस दीन से हम निकले थे, हम फिर उसी में दाख़िल होते हैं, वे स्वयं ही आकर इस्लाम में शामिल हो गए।

हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने बनू आमिर, असद, ग़तफ़ान, हवाज़िन, सुलीम तथा तै सहित किसी की बैअत उस समय तक स्वीकार नहीं की जब तक कि उन्होंने उन समस्त लोगों को जिन्होंने इस्लाम से विमुखता की दशा में अपने हाँ के मुसलमानों को आग में जलाया था तथा उनके शवों को कुचला था तथा मुसलमानों पर चढ़ाई की थी कि उनको मुसलमानों के हवाले न कर दिया। आप रज़ी. ने इसका विवरण हज़रत अबू बकर रज़ी. की सेवा में भी भिजवाया।

हज़रत अबू बकर रज़ी. ने उत्तर देते हुए लिखा कि जो कुछ तुमने किया तथा सफलता तुमको प्राप्त हुई, अल्लाह तुमको इसका बदला प्रदान करे, तुम अपने हर काम में अल्लाह से डरते रहो- إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوا وَّالَّذِينَ هُم مُّحْسِنُونَ (सूर: नहल-१२९) नि:सन्देह अल्लाह उन लोगों के साथ है जो तक्वा धारण करते हैं तथा जो उपकार करने वाले हैं, तुम अल्लाह के काम में पूरा संघर्ष करना तथा आलस्य मत करना। वे लोग जिन्होंने ख़ुदा के आदेश का आज्ञा पालन न किया हो तथा इस्लाम के शत्रु हों, उनकी हत्या से यदि इस्लाम को लाभ मिलता हो तो वध कर सकते हो। हज़रत ख़ालिद रज़ी. एक महीना बुज़ाख़ा में ठहरे रहे तथा हज़रत अबू बकर रज़ी. के आदेशानुसार अपराधियों को कठोर दंड दिया।

हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने बनू आमिर के मामले का निबटारा करके तथा उनसे बैअत लेने के बाद उयीना बिन हिस्न और क़रा बिन हवेरा को बन्दी बना कर हज़रत अबू बकर रज़ी. के पास भेज दिया। आप रज़ी. ने उनको क्षमा कर दिया तथा उनको जीवन दान दिया।

अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह ने हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद के ज़फ़र नामक स्थान की ओर जाने, उम्मे ज़िमल सलमा सुपुत्री मालिक सुपुत्री हुज़ैफ़ा, जिसने ग़तफ़ान, तै, सुलीम तथा हवाज़िन के कुछ लोगों ने बज़ाख़ा में हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद के हाथों परजित हुए थे, उन लोगों को उनकी हार पर शर्म दिला कर फिर स्वयं भी विभिन्न क़बीलों में बार बार चक्कर लगा कर उनको युद्ध के लिए उकसाया था, उससे अति घोर युद्ध, उम्मे ज़मल ही हत्या, शेष बचे साथियों की बोखलाहट तथा पलायन का विवरण बयान करने के बाद इरशाद फ़रमाया- इस प्रकार इस फ़ितने की आग ठंडी हो गई तथा अरब महाद्वीप के उत्तर पूर्वी भाग में इस्लाम से विमुखता एवं विद्रोह समाप्त हो गया, तथा फ़रमाया- यह वर्णन अभी आगे भी इंशाअल्लाह हज़रत अबू बकर रज़ी. के बारे में बयान होगा, इस समय इतना ही बयान करता हूँ।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह ने दूसरे ख़ुत्ब: से पहले मुकर्रमा साबरा बेगम साहिबा पतनी मुकर्रम रफ़ीक़ अहमद बट साहब ऑफ़ सियालकोट और मुकर्रमा सुरय्या रशीद साहिबा पतनी मुकर्रम रशीद अहमद बाजवह साहब ऑफ़ वर्तमान निवासी कैनेडा का सद्वर्णन फ़रमाया तथा उनके जनाज़े की नमाज़ गायब पढ़ाने की घोषणा की।

☆ ☆ ☆

क़ुरआन-ए-मजीद की 26 आयतों पर आरोपों के उत्तर

(लेखक- मुहम्मद हमीद कौसर, नाज़िर दावत इलाल्लाह मर्कज़िया, उत्तर भारत क़ादियान)

(भाग-5) अनुवादक**-** सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

आरोप आयत नंबर 2(c)

وَاِذَا ضَرَبۡتُمۡ فِی الۡاَرۡضِ فَلَیۡسَ عَلَیۡکُمۡ جُنَاحٌ اَنۡ تَقۡصُرُوۡا مِنَ الصَّلٰوۃِ ٭ۖ اِنۡ خِفۡتُمۡ اَنۡ یَّفۡتِنَکُمُ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا ؕ اِنَّ الۡکٰفِرِیۡنَ کَانُوۡا لَکُمۡ عَدُوًّا مُّبِیۡنًا (सूरत निसा : 4/ 102)

अनुवाद : और जब तुम ज़मीन में (जिहाद करते हुए) यात्रा पर निकलो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम नमाज़ क़सर कर लिया करो, यदि तुम्हें ख़ौफ़ हो कि वे लोग जिन्हों ने कुफ्र किया है तुम्हें आज़माईश में डालेंगे। निसंदेह काफ़िर तुम्हारे खुले खुले दुश्मन हैं।

स्पष्टीकरण: इस आयत में अल्लाह तआला ने मुसलमानों को यह हुक्म दिया कि जब वे हालत जंग और मैदान-ए-जंग में हों और इस के लिए वे ज़मीन में यात्रा करने वालों की हालत में हों तो उनको आज्ञा दी गई है कि अपनी नमाज़ छोटी कर लिया करें। अर्थात ज़ुहर की दो रकात अस्र की दो रकात और इशा की दो रकात पढ़ लिया करें और एक और अवसर पर अल्लाह तआला ने ऐसी हालत में स्लातुल खौफ़ एक विशेष कैफ़ीयत में अदा करने की आज्ञा दी है और उसका उद्देश्य अल्लाह तआला ने यह बताया है कि ऐसा न हो कि तुम नमाज़ की अदायगी में डूबे हो और दुश्मन की तरफ़ तुम्हारी तवज्जा न हो और वे तुम्हें कोई मार दे या हानि पहुंचाए। इस वजह से अल्लाह तआला ने जंग की हालत में सफ़र करने पर नमाज़ें क़सर करने और ज़रूरत के समय सलातुल खौफ़ अदा करने की इजाज़त दी है। बुद्धिमान व्यक्ति की समझ से दूर है कि निवेदन कर्ता को इस साफ़ और सरीह आयत पर क्या आरोप है? बहर हाल यह एक असूली तालीम है और क़ियामत तक रहने वाली तालीम है जब किसी समय और स्थान में उसकी ज़रूरत पेश आए तो इस पर अमल किया जाएगा उमूमी हालात में इस पर अमल नहीं किया जाता। ऊपर वर्णित आयत के आख़िर में वर्णन है कि "اِنَّ الۡکٰفِرِیۡنَ کَانُوۡا لَکُمۡ عَدُوًّا مُّبِیۡنًا" निसंदेह काफ़िर तुम्हारे खुले खुले दुश्मन हैं। शायद आरोप लगाने वाले इन शब्दों से यह तास्सुर देने की कोशिश कर रहे हैं कि "काफ़िर तुम्हारे खुले खुले दुश्मन हैं।" से मुराद यह है कि हर वह इन्सान जो मुसलमान नहीं वह काफ़िर है और वह मुसलमानों का दुश्मन है।

अगर इस ग़लती में ग्रस्त करने की कोशिश की जा रही है तो यह कोशिशें न केवल खंडन करने के योग्य बल्कि निंदनीय हैं। इस आयत का अर्थ यह है कि वे लोग जो इस्लाम का इन्कार करके इस को इस संसार से ख़त्म करने की कोशिशें करते हैं और तुम्हें सही तौर पर नमाज़ भी अदा नहीं करने देते वे तुम्हारे खुले खुले दुश्मन हैं। इस विषय में एक मिसाल तहरीर कि सन 5 हिजरी, फरवरी मार्च 627 ई. कुफ़्फ़ार का लश्कर जिसमें दस हज़ार से लेकर पंद्रह हज़ार तक अस्करी थे मदीना के मुसलमानों को नष्ट करने के लिए मदीना के बाहर पहुंच गया। मुसलमानों ने अपनी रक्षा के लिए एक ख़ंदक़ खोदी ताकि कुफ़्फ़ार उसे पार न कर सकें और मदीना उनके

अचानक हमले से सुरक्षित रहे। मुसलमानों ने अपने बचाओ और हिफ़ाज़त के लिए अपने सामर्थ्य अनुसार तैयारी की।

इस दौरान एक अवसर ऐसा आया कि मुसलमान अस्र की नमाज़ वक़्त पर अदा नहीं कर सके। यहां तक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नमाज़ अस्र सूरज डूबने के बाद अदा की इसके बाद मग़रिब की नमाज़ अदा की। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन है कि ग़ज़वा ख़ंदक़ के दिन नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने इन काफ़िरों के घरों और क़ब्रों को आग से भर दिया जिन्हों ने सूरज डूब जाने तक हमें नमाज़-ए-अस्र न अदा करने दी। (बहवाला सही बुख़ारी, अबवाबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वा ख़नदक)

सारांश यह कि वर्णित आयत में विशेषता इन काफ़िरों की दुश्मनी का वर्णन है जो मुसलमानों को बरवक़्त नमाज़ अदा करने में रोक बनते थे।

आरोप आयत नंबर 2(e)

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ۭ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُھُمْ بَدَّلْنٰھُمْ جُلُوْدًا غَيْرَھَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا (सुरत निसा 4/ 57)

अनुवाद : निसंदेह वे लोग जिन्हों ने हमारी आयतों का इन्कार किया है हम उन्हें आग में दाख़िल करेंगे। जब कभी उनके चमड़े गल जाऐंगे हम उन्हें बदल कर दूसरे चमड़े दे देंगे ताकि वे अज़ाब को चखें। निसंदेह अल्लाह कामिल ग़लबा और साहब-ए-हिक्मत है।

स्पष्टीकरण : क़ुरआन-ए-मजीद में इन्सान के जन्म का यह उद्देश्य बताया गया है कि وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ(सूरत ज़ारियात 51/57) अनुवाद : और मैंने जिनो और इंसानों को पैदा नहीं किया परन्तु इस उद्देश्य से कि वे मेरी इबादत करें।

फिर फ़रमाया : الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ○ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ

(सूरः अल् मुल्क,सूरः नंबर 67 आयत 3)अनुवाद : वही जिसने मौत और ज़िंदगी को पैदा किया ताकि वे तुम्हें परखे कि तुम में से कौन अमल के एतबार से बेहतरीन है। और वह कामिल ग़लबा वाला (और) बहुत क्षमा करने वाला है।

फिर फ़रमाया وَهَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ(सूरत बलद 90/11) अनुवाद : और हमने उसे दो उच्च रास्तों की तरफ़ हिदायत दी। तथा फ़रमाया : فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا (सूरत शम्स्- 91 /9) अनुवाद अतः उसकी बे इन्साफियोंऔर उसकी परहेज़गारियों (की तमीज़ करने की सलाहीयत) को उसकी फ़ित्रत में डाला गया।

इसका अधिक स्पष्टीकरण यह है कि हर इन्सान का शरीर अपनी माँ के गर्भ में तैयार होता है फिर वह जन्म लेकर इस दुनिया में आता है इस दुनिया में कोई इन्सान यह नहीं बता सकता कि वह अपनी माँ के गर्भ में आने से पहले कहाँ था और कैसा था। और फिर यह भी एक हक़ीक़त है कि इन्सानी ज़िंदगी दो चीज़ों का मेल है एक उसका जिस्म दूसरी उसकी रूह (आत्मा) और जब उसकी रूह जिस्म से निकल जाती है तो कहा जाता है कि उसकी मौत हो गई और मौत के बाद बहुत से धर्म वाले उसके मुर्दा जिस्म को जलते हुए अंगारों में जला कर राख कर देते हैं एक

नज़ारा نضجت جلودهم का यहां नज़र आ जाता है और कुछ धर्म वाले इस जिस्म को क़ब्र के हवाले कर के ख़ाक बना देते हैं जहां उसके जिस्म को ज़मीनी कीड़े मकोड़े खा कर नष्ट कर देते हैं और نضجت جلودهم इस तरह भी पूरा हो रहा होता है इसके बाद उसकी रूह उस जगह वापस चली जाती है जहां से वह आई थी और अगर इस दुनिया में उसने अपनी ज़िंदगी ख़ुद अपने मालिक और स्रष्टा की तालीमात के अनुसार गुज़ारी होगी तो उसका अगला सफ़र जन्नत में रुहानी दर्जों की प्राप्ति के लिए शुरू हो जाता है। जिसने इस दुनिया में गुनाह, पाप, बुराइयाँ, ज़ुलम आदि किया होगा उसको उसके गुनाहों की सज़ा देने के लिए जहन्नुम की तरफ़ भिजवा दिया जाता है जहां उसके गुनाहों की सज़ा के बाद उसको जहन्नुम से निकाल कर जन्नत के आरंभिक दर्जों की तरफ़ सफ़र के लिए भिजवा दिया जाता है इसलिए इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु (1965-1889) फ़रमाते हैं "इन्सान हमेशा दोज़ख़ में नहीं रहेगा बल्कि जिस तरह माँ के पेट में कुछ अरसा के लिए रहता है इस तरह कुछ अरसा के लिए वह दोज़ख़ में रहेगा फ़िर बाहर की खुली हवा अर्थात जन्नत में आ जाएगा। इसी तरह हदीस में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं :

ياتي على جهنم زمان ليس فيها احد ونسيم الصبا تحرك ابوابها (तफ़सीर मुआलिम तनज़ील आयत- فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا :107/11) अर्थात जहन्नुम पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि उस में कोई व्यक्ति नहीं होगा और हवा उसके दरवाज़ों को खटखटाएगी इस हदीस से भी इस क़ुरआन की आयत की तसदीक़ होती है।"

(तफ़सीर सग़ीर हाशिया पृष्ठ 844)

इस दुनिया में हम देखते हैं कि क़ातिल, चोर, डाकू, व्यभिचारी को जेल की सज़ाएं दी जाती हैं और उनमें से कुछ को फांसी की सज़ा गले में रसा और फंदा डाल कर तख़्ते पर लटका कर दी जाती है। प्रश्न पैदा होता है कि ऐसा क्यों किया जाता है? इसके उत्तर में यही कहा जाएगा कि उसको उसके जुर्म की सज़ा का मज़ा चखाने के लिए। इसी से अंदाज़ा लगा लें कि इस आयत में यह जो वर्णन है कि जब कभी उनके चमड़े गल जाऐंगे हम उन्हें बदल कर दूसरे चमड़े दे देंगे ताकि वे अज़ाब चखें। गुनाहों का अज़ाब चखाने के लिए क़ुरआन-ए-मजीद में ये शब्द आए हैं परन्तु क़ुरआन-ए-मजीद और हदीसों से यह भी ज्ञान होता है कि जहन्नुम से एक दिन सब रिहाई पा जाऐंगे।

इस हक़ीक़त को वर्णन करने के बाद इस आयत पर कोई आरोप बाक़ी नहीं रहता बल्कि हमारी दुआ है कि अल्लाह तआला हर इन्सान को वर्णित आयत से इबरत और नसीहत हासिल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और अपने उद्देश्य को समझ कर ऐसी ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ दे जो रज़ाए इलाही के हुसूल के लिए हो। आमीन।

आरोप आयत नंबर 2(g)

اِنَّمَا النَّسِیْٓءُ زِیَادَۃٌ فِی الْکُفْرِ یُضَلُّ بِہِ الَّذِیْنَ کَفَرُوْا یُحِلُّوْنَہٗ عَامًا وَّیُحَرِّمُوْنَہٗ عَامًا لِّیُوَاطِـُٔوْا عِدَّۃَ مَا حَرَّمَ اللّٰہُ فَیُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰہُ ؕ زُیِّنَ لَہُمْ سُوْٓءُ اَعْمَالِہِمْ ؕ وَاللّٰہُ لَا یَہْدِی الْقَوْمَ الْکٰفِرِیْنَ ○

(सूर: अल् तौबा, सूर: नंबर 9 आयत नंबर 37)

अनुवाद : निसंदेह नसई कुफ़्र में एक बढ़ोतरी है। इससे उन लोगों को जिन्होंने कुफ़्र किया गुमराह कर दिया जाता है। किसी वर्ष तो वे उसे जायज़ क़रार देते हैं और किसी वर्ष उसे हराम क़रार देते हैं ताकि उसकी गिनती पूरी रखें जिसे

अल्लाह ने हुरमत वाला क़रार दिया है, ताकि वह उसे जायज़ बना दें जिसे अल्लाह ने हराम किया है। उनके लिए उनके आमाल की बुराई ख़ूबसूरत करके दिखाई गई है और अल्लाह काफ़िर क़ौम को हिदायत नहीं देता।

स्पष्टीकरण इस्लाम से पूर्व अरबों में क़मरी वर्ष बारह महीनों पर आधारित होता था। जिनमें से 4 महीने हुर्मत वाले महीने कहलाते थे लेकिन अरब लोग इन हुर्मत वाले महीनों को अपने दुनियावी लाभ के लिए अपनी मर्ज़ी से आगे पीछे कर देते थे और उसे अरबी में "अल्नसी" कहा जाता था ताकि हुर्मत वाले महीनों में जो चीज़ें हराम हैं जैसे लड़ाई इत्यादि वे कर सकें और बाद में कुछ दूसरे महीनों को हुर्मत वाला महीना क़रार दे देते थे -क़ुरआन-ए-मजीद की जिस आयत पर आरोप कर्ता ने आरोप लगाया है इस का अनुवाद यह है। "अल्नसी" कुफ्र में एक बढ़ोतरी है और इस के माध्यम से लोगों को गुमराह किया जाता था।

इस्लाम ने भी इन महीनों को बरक़रार रखा और उनके नाम ये हैं (1) मुहर्रम (2) सफ़र (3) रबी'-उल-अव्वल (4) रबीउस्सानी (5)जमादी-उल-अव्वल (6) जमादी-उस-सानी (7) रजब (8) शाबान (9) रमज़ान (10) शवाल (11) ज़िलक़ा'दा (12) ज़िलहिज्जा।

उनमें से रसूले पाकसल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अरबों के पूर्व के तरीक़ के अनुसार चार महीनों को हुर्मत वाले महीने क़रार दिया और उनके नाम ये हैं : (1) ज़िलक़ा'दा (2) ज़िलहिज्जा (3) मुहर्रम (4) रजब

(बहवाला सही अल् बुख़ारी, किताब अल्तफ़सीर अल् तौबा)

इन चार महीनों की हुर्मत क़ायम करने का उद्देश्य यह था कि हज करने वाले शांति से ख़ाना काअबा तक यात्रा कर सकें और उनको कोई ख़ौफ़ और ख़तर लाहक़ न हो। इन चार महीनों में से एक महीना ज़िलक़ा'दा ज़िलहिज्जा से पहले आता है। और फिर ज़िलहिज्जा के बाद मुहर्रम का महीना भी हुरमत वाला महीना है। इस में हज करने वाले हज के कर्तव्यों का निवारण करने के बाद बे-ख़ौफ़ और ख़तर पुरअमन माहौल में अपने घरों को वापस चले जाएं।

क़ुरआन-ए-करीम की इस आयत के माध्यम से अल्लाह तआला ने अल् नसी को पूर्णता मना क़रार दिया है और उसे कुफ्र और गुमराही के ज़ुमरे में शामिल किया है। क्योंकि अल् नसी के माध्यम से हज करने वालों को नुक़्सान पहुंचाने का अंदेशा था। इस्लाम ने हज करने वालों की सलामती के लिए और उन चार महीनों में जज़ीरा अरब और दुनिया में अमन और शान्ति का माहौल बरक़रार रखने के लिए उनकी हुर्मत को बरक़रार रखने और रखवाने का आदेश दिया है। ऐसा इन्सान जो इस विषय में अपनी ज़िद और अना बरक़रार रखते हुए इन हुर्मत वाले महीनों का इन्कार करने वाला है और इस वतीरे को छोड़ना नहीं चाहता है उनके बारे में अल्लाह का फ़रमान है कि जो ख़ुद हिदायत नहीं चाहता अल्लाह भी उसे हिदायत नहीं देता।

वर्णित आयत के आख़िर पर ख़ुदा का इरशाद कि "अल्लाह काफ़िर क़ौम को हिदायत नहीं देता।" अर्थात जो इन्सान ख़ुद हिदायत का आशावान नहीं अल्लाह तआला उसे ज़बरदस्ती हिदायत नहीं देता क्योंकि दीन के सिलसिला में कोई जबरऔर इकराह नहीं।

आरोप आयत नंबर 2(h)

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ
وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ○

(सूरः अल् मायदा, सूरः नंबर 5 आयत नंबर 58)

अनुवाद : हे वे लोगो जो ईमान लाए हो उन लोगों में से जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई उन को जिन्हों ने तुम्हारे दीन को उपहास और खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

स्पष्टीकरण : एक इन्सान जब सच्चे दिल से इस्लाम को बतौर दीन अपने लिए स्वीकार कर लेता है तो लाज़िमी तौर पर उसके दिल में अल्लाह तआला और उसके रसूल की मुहब्बत पैदा हो जाती है और प्रतिदिन वह मज़बूत और गहरा होती जाता है। और दुनिया का ये तरीक़ है कि कोई भी ग़ैरत मंद इन्सान यह पसंद नहीं करता कि कोई दूसरा व्यक्ति उसके महबूब का उपहास और अपमान करे उदाहरणत: एक ऐसा इन्सान जो अपने माता पिता से प्रेम करता और उनका सम्मान करता है। उसकी ग़ैरत बर्दाश्त नहीं करेगी कि कोई दूसरा उसके माता पिता की अपमान करे और उन्हें बुरा भला कहे। यदि अपमान करने वाला अपनी इस हरकत से बाज़ नहीं आएगा तो एक ग़ैरत मंद इन्सान न तो इस से दोस्ती रखेगा और न ही उस से किसी किस्म की क़ुरबत रखेगा।

दीन-ए-इस्लाम के बारे में अल्लाह तआला का फ़रमान है कि उसे जो चाहे क़बूल करे और जो चाहे उसका इन्कार कर दे उस पर कोई ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं अगर किसी की समझ में दीन-ए-इस्लाम की तालीमात नहीं आतीं तो उस का हक़ है कि वे इन्कार कर दे और एक शरीफ़ इन्सान इन्कार के बाद ख़ामोशी इख़तियार करेगा परन्तु कोई दूसरा व्यक्ति तक़ज़ीब और तकफ़ीर के साथ साथ उपहास और मज़ाक़ भी करे और इस्लाम के संस्थापक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और क़ुरआन-ए-मजीद के साथ धृष्टता-पूर्वक व्यवहार करे तो अल्लाह तआला ने मोमिनों को ये नसीहत की कि तुम्हारी ईमानी ग़ैरत का तक़ाज़ा है कि ऐसे लोगों को अपना दोस्त न बनाओ।

और एक सादा सी मिसाल से उसे यूं भी समझा जा सकता है कि शरारती और बुरी आदात रखने वाले बच्चों से माता पिता अपने बच्चों को दोस्ती न रखने और उस से दूर रखने की नसीहत करते हैं ताकि वे उस की सोहबत से बुरा प्रभाव स्वीकार न कर लें। इस आयत में समस्त किताब वाले या दूसरे धर्मों के लोगों से दोस्ती बनाने से कदापि मना

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457
FENLEYROSH
Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790
www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

नहीं किया गया। जबकि उन लोगों से रोका गया है जो कि इस्लाम के अक़ायद और नज़रियात और पवित्रताओं का अपमान और इहानत करते हैं। लेकिन यहां दोस्ती न करने का कदापि यह अर्थ नहीं कि इस्तिहज़ा और अपमान करने वालों के ख़िलाफ़ इस तरह के प्रदर्शन किए जाएं जिन के माध्यम से देश और लोगों का जानी-ओ-माली नुक़्सान हो। इसकी इस्लाम कदापि इजाज़त नहीं देता। शांति प्रिय तरीक़ से अपनी बात रखने और आरोप लगाने वालों का उत्तर देने की आज्ञा है।

इस स्पष्टीकरण के बाद न तो इस पर कोई आरोप रहता है और न ही अनुचित प्रश्न की गुंजाइश बाक़ी रहती है।

आरोप आयत नंबर 2 (j)

اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ؕ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ○

(सूर: अल् अम्बिया, सूर: नंबर 21 आयत नंबर 99)

अनुवाद : निसंदेह तुम और वह जिसकी तुम अल्लाह के सिवा उपासना करते थे, जहन्नुम का ईंधन हो। तुम इस में उतरने वाले हो।

स्पष्टीकरण- अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-मजीद में कुछ दूसरे स्थानों पर फ़रमाया : وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ (सूर: अल् फ़ातिर सूर: नंबर 35, आयत नंबर 25) अनुवाद- और कोई उम्मत नहीं परन्तु ज़रूर उस में कोई डराने वाला गुज़रा है अर्थात अल्लाह तआला ने हर क़ौम में कोई न कोई नज़ीर और हादी भेजा है। एक और आयत में अल्लाह तआला ने फ़रमाया وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ (सूरत राद, सूर: नंबर 13 आयत नंबर 8) अनुवाद- और हर क़ौम के लिए एक मार्गदर्शक होता है।

हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रश्न किया कि

يا رسول الله كم الانبياء؟ قال مائة الف وأربعه وعشرون ألفًا (تفسير القرآن العظيم للامام الجليل اسماعيل بن كثير 774 هجری، تفسیر سورة النساء)

कि दुनिया में कितने नबी आए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया एक लाख चौबीस हज़ार नबी अल्लाह ने इस दुनिया में भिजवाए। और उनकी आमद का उद्देश्य अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-मजीद में फ़रमाया :

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ

(सूर: अल् नहल, सूर: नंबर 16 आयत नंबर 37)

अनुवाद : और निसंदेह हम ने हर उम्मत में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत करो और बुतों से इजतिनाब करो। अत: उनमें से कुछ ऐसे हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी और उन्हीं में ऐसे भी हैं जिन पर गुमराही वाजिब हो गई। अत: ज़मीन में चलो फिरो और फिर देखो कि झुठलाने वालों का अंजाम कैसा था।

प्रत्येक नबी और रसूल जो आया उसने लोगों को अल्लाह की इबादत का हुक्म दिया और उसकी इबादत में यह हिक्मत बताई कि वह समस्त संसार का मालिक है और उसी के हुक्म से इस कायनात में हर चीज़ अपना कर्तव्य अदा कर रही है।

तक़रीबन हर मज़हब के अक़ीदे के अनुसार इस कायनात को पैदा करने वाला एक ख़ालिक़ और मालिक है। इसके नाम तो अलग हो सकते हैं परन्तु मुराद ख़ुदा तआला की ज़ात ही होती है। मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब की मुक़द्दस कुतुब से कुछ इबारतें निम्नलिखित हैं।

वेद और गीता में ख़ुदा का रूप

वह एक है किसी दूसरे के भागीदारी के बिना है।

(छान्दोग्य उपनिषद 1-2-6)

अनुवाद : इस संसार की चीज़ों में कुछ भी हरकत है वे सब उस हाकिम, क़ुदरत रखने वाले की इच्छा से है।

(यजुर्वेद, अध्याय 40- मंत्र 1)

अनुवाद : (हे मालिक तेरे जैसा न कोई दोनों लोकों में है और न ज़मीन के कणों में और न तेरे जैसा कोई पैदा हुआ है और न होगा।

(यजुर्वेद, अध्याय 27 - मंत्र 36)

अनुवाद : यह समस्त संसार उस अल्लाह के आदेश से चल रहा है। (यजुर्वेद ,अध्याय 40, मंत्र 1)

एकेश्वरवाद का वर्णन भगवत गीता से

अनुवाद : हे मनुष्यो! अपने ईश्वर को पहचानो क्योंकि वह एक ईश्वर तुम्हारा पैदा करने वाला है इस ईश्वर ने तुम्हें हवा (वायु) दी। अग्नी दी,धरती दी, आकाश दिया, जल दिया, तुम अपने ईश्वर को पहचानो जिसने तुम्हें इतने इनामात दिए। हे इनसानो अगर तुम मुझे नहीं पहचानोगे तो बहुत बड़ी गुमराही में होगे।

(भगवत गीता अध्याय 3 श्लोक 10)

अनुवाद : मेरी विशेषताओं को न जानने वाले बेवक़ूफ़ लोग मुझे शरीर वाला समझ कर मेरा अपमान करते हैं।

(गीता, अध्याय 9 श्लोक 11)

अनुवाद : अपनी अदृश्य शक्ल में समस्त कायनात में प्रवेश किए हुए सभी जानदार मुझ में से हैं लेकिन मैं उनमें रहता नहीं। (गीता, अध्याय 9 श्लोक 11)

तौरात और इंजील में ख़ुदा का तसव्वुर

यहूदियों और ईसाइयों की मुक़द्दस किताब के आरम्भ में ही ये तहरीर है।

(क) ख़ुदा ने आरंभ में ज़मीन और आकाश को पैदा किया। ख़ुदा ने कहा रोशनी हो जा और रोशनी हो गई। ख़ुदा ने रोशनी को दिन किया और अँधेरे को रात। (किताबुल मुक़द्दस पुराना और नया अह्दनामा, पैदाइश बाब 1 आयत 1 से 3)

(ख) सुन ले हे इस्राईल ख़ुदावंद हमारा ख़ुदा, अकेला ख़ुदावंद है, तू अपने सारे दिल और अपने सारे जी और अपने सारे ज़ोर से ख़ुदावंद अपने ख़ुदा को दोस्त रख।

(इस्तस्ना, बाब 6 आयत 4)

(ग) ख़ुदा की भांति कोई नहीं जो तेरी मदद के लिए आसमान पर और अपने प्रताप में आकाश पर सवार है। (इस्तस्ना, बाब 33 आयत 26)

इंजील में वर्णन है कि "और हमेशा की ज़िंदगी यह है कि वह तुझे ख़ुदा ए वाहिद और बरहक़ और यसू मसीह को जिसे तू ने भेजा है जाने। (इंजील, यूहन्ना, ब 17 आयत 4)

गुरु ग्रंथ साहब में ख़ुदा का तसव्वुर

गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु जी ने फ़रमाया:

अनुवाद : उस ख़ुदा तआला के हुज़ूर ही झुको। जो अव्वल है, पाक है, और शाश्वत है और समस्त ज़मानों में एक ही हालत में रहता है अर्थात जिसकी किसी भी सिफ़त में सदैव खत्म हो जाना पैदा नहीं हो सकता।

(जपूजी गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 7 पृष्ठ 1)

गुरू नानक जी के निकट ख़ुदा तआला का मुक़र्रब बनने के लिए किसी ख़ास मुल्क, इलाक़े, धर्म, क़ौम, क़बीला या नसल से पैदा होना ही ज़रूरी नहीं। हर एक नेक और ईमानदार व्यक्ति जो ख़ुलूस-ए-दिल से अपने ईमान के अनुसार अच्छे काम करता है उसका कुर्ब हासिल कर सकता है। गुरू नानक जी फ़रमाते हैं :

अनुवाद : बुराई अच्छी तरह प्रकट हो जाती है छुपी नहीं रहती। वह अल् हक़ सब कुछ देखता है। कोई भी बात उस से छुपी नहीं है। हर व्यक्ति ने छलांग लगाई है लेकिन जो अल्लाह तआला चाहता है वही कुछ होता है। उसके दरबार में ज़ात-पात और ताक़त की कोई क़दर-ओ-क़ीमत नहीं है और वहां इन्सान का नए जीवों से वास्ता पड़ता है। वे लोग बहुत ही क़लील हैं जो इज़्ज़त और आबरू हासिल करते हैं वही भले लोग हैं ।

(आसावार गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 469, पृष्ठ 5 और 6)

इसी कारण से अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मेरी इबादत में ही तुम्हारा लाभ है। मेरे अतिरिक्त जिस किसी की तुम इबादत करोगे वह तुम्हें फ़ायदा नहीं देगी। यहां इसी किस्म के माबूदों को जलाने का वर्णन है जो झूठे तौर पर ख़ुदा बन जाते हैं और अपनी इबादत करवाते हैं और उन्हीं में से एक हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में फ़िरऔन भी था।

एक लाख चौबीस हज़ार नबी रसूल, अवतार जो इस दुनिया में आए उन्होंने एक ही अल्लाह, एक ही ख़ुदा, एक ही ईश्वर, की इबादत का आदेश दिया और इसके इलावा अल्लाह की ही मख़लूक़ में से किसी और की इबादत लाभदायक नहीं हो सकती। इस लिए वे इबादत भी ज़ाए होगी और जिसकी भी इबादत की जाएगी वह भी उनसे बुरा करेगा और उसको भी अल्लाह तआला जहन्नुम का ईंधन इबरत और नसीहत के लिए बनाएगा।

इस तशरीह के बाद इस आयत पर कोई आरोप बाक़ी नहीं रहता। जैसा कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मसीह मौऊद मह्दी मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "हमारा परमानन्द हमारा ख़ुदा है क्योंकि हमने उसका अनुभव किया है। हर प्रकार का सौन्दर्य उसमें विद्यमान है। यह दौलत लेने योग्य है यद्यपि कि जीवन देकर प्राप्त हो, यह रत्न ख़रीदने योग्य है यद्यपि समस्त अस्तित्व खोकर प्राप्त हो। हे वंचित रहने वालो! इस झरने की ओर दौड़ो कि

यह तुम्हें सींचेगा। यह जीवनदायी झरना है जो तुम्हें सुरक्षित रखेगा। मैं क्या करूँ और किस प्रकार इस शुभ सन्देश को हृदयों तक पहुँचाऊँ, किस डफ़ली से मैं बाज़ारों में मुनादी करूँ कि तुम्हारा ख़ुदा यह है ताकि लोग सुन लें, किस औषधि से मैं उपचार करूँ ताकि सुनने के लिए लोगों के कान खुलें।"

(कश्ती-ए- नूह, रुहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 22-21)

आरोप आयत नंबर 2 (l)

وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا (सूरत फ़तह, आयतों - 21)

अनुवाद : अल्लाह ने तुमसे कसीर अम्वाल-ए-ग़नीमत का वादा किया है जो तुम हासिल करोगे। अत: ये तुम्हें उसने तुरंत प्रदान कर दिए और लोगों के हाथ तुम से रोक दिए ताकि यह मोमिनों के लिए एक बड़ा निशान हो जाएगी और वह तुम्हें सदमार्ग की तरफ़ हिदायत दे।

आरोप आयत नंबर 2 (m)

فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○

(सूरत अनफ़ाल, सूरत नंबर 8 आयत नंबर 70)

अनुवाद : अत: जो माल-ए-ग़नीमत तुम हासिल करो उस में से हलाल और पवित्र खाओ और अल्लाह का तक़्वा इख़तियार करो। निसंदेह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और बार-बार रहम करने वाला है।)

स्पष्टीकरण : निवेदन कर्ता ने जिन 26 आयतों को खत्म करने की मांग की है (मुख में मिट्टी) उनमें नंबर 2 (l) और 2(m) में अम्वाल-ए-ग़नीमत का वर्णन है। उसके स्पष्टीकरण में तहरीर है कि इन आयतों का साबिक़ा आयतों और तारीख़ी हालात की पृष्ठभूमि में अध्यन करना होगा।

जैसा कि वर्णन हो चुका है कि मुसलमान मुहाजिर मक्का के काफिरों के हाथों सताए जाने के बाद मजबूरन समस्त माल और असबाब, घर मकान, मक्का में छोड़कर मदीना में आ गए इस हिज्रत की वजह से बज़ाहिर उनके व्यापार और कारोबार जो मक्का में थे तबाह-ओ-बर्बाद हो गए थे मदीना आकर अंसार भाइयों की मदद से उन्होंने पुन: अपनी तिजारतें शुरू कीं ताकि जल्द से जल्द अपने पांव पर खड़े हो जाएं परन्तु कुफ़्फ़ार-ए-मक्का उनका पीछा नहीं छोड़ रहे थे। थोड़ी थोड़ी मुद्दत के बाद उन पर हमला करते और मजबूरन मुसलमानों को अपने बचाओ और आत्मरक्षा के लिए उनसे जंग करनी पड़ती इन जंगों में जब फ़रीक़ मुख़ालिफ़ को शिकस्त हो जाती तो वह अपना माल और असबाब छोड़कर भाग जाते तो उनका छोड़ा हुआ माल मुसलमानों में तक़सीम कर दिया जाता और उसे माल-ए-ग़नीमत कहा जाता था। इस तक़सीम का उद्देश्य यह होता था कि व्यर्थ की जंग जो उन पर थोपी गई और इस के लिए उन्हें तैयारी करनी पड़ी अपने माल और अपनी जान उनमें झोंकनी पड़ी इस के लिए अपनी तिजारत-ओ-कारोबार को अस्थाई तौर पर बंद करना पड़ा। इस नुकसान की किसी हद तक भरपाई हो सके।

हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में उसकी तक़सीम का ये उसूल था कि सारे

माल में से पांचवां हिस्सा अल्लाह और उसके रसूल के लिए वक़्फ़ कर दिया जाता था। इसके बाद शेष माल जंग में शरीक होने वालों में बराबर तक़सीम कर दिया जाता। ये भी तय था कि सवार को पैदल की अपेक्षा दो हिस्से दिए जाते और पांचवां हिस्सा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए विशेष कर दिया जाता इस में से कुछ तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने परिजनों में बाँट देते और अक्सर हिस्सा मुसलमानों के इजतिमाई दीनी, क़ौमी उद्देश्यों में खर्च होता था। आयत में जो यह फ़रमाया गया عَجَّلَ لَكُمۡ هٰذِهٖ (अत: ये तुम्हें उसने तुरंत प्रदान कर दिए) इन शब्दों में इन अम्वाल-ए-ग़नीमत के मिलने का वर्णन है जो ख़ैबर में लड़ने वाली जंग (7 मई 628) में मुसलमानों को मिले थे और लोगों के हाथ उनसे रोक लिए (...كَفَّ اَيۡدِيَ النَّاسِ) से मुराद हुदैबिया के अवसर पर कुफ़्फ़ार मक्का को तुम पर हमला करने से बाज़ रखा।

माल-ए-ग़नीमत पर क़ब्ज़ा करने और उसे इस्तिमाल करने के बारे में यहूद और ईसाइयों की दीनी किताब तौरात में भी वर्णित है कि और जब तू किसी शहर के पास उस से लड़ने के लिए आ पहुंचे तो पहले इस से सुलह का पैग़ाम दे। तब यूं होगा कि अगर वे तुझे उत्तर दे कि सुलह मंज़ूर और दरवाज़ा तेरे लिए खोल दें तो समस्त लोग जो इस शहर में पाए जावें तुझे भूमिकर देने वाली होंगे और तेरी ख़िदमत करेंगे और अगर वे तुझसे सुलह न करें बल्कि तुझसे जंग करें तो उसका घेराव कर और जब ख़ुदावंद तेरा ख़ुदा उसे तेरे क़ब्ज़े में कर देवे तो वहां के हर एक मर्द को तलवार की धार से क़तल कर परन्तु औरतों और लड़कों और पशुओं को और जो कुछ इस शहर में हो उसका सारा लूट अपने लिए। (इसतस्ना बाब 20, आयत 10 से 15)

यहूदी शरीयत का यह हुक्म केवल एक काग़ज़ी हुक्म नहीं था जिस पर कभी अमल नहीं किया गया हो बल्कि बनी इस्राईल का हमेशा इसी पर अमल रहा है और यहूदी निर्णय हमेशा इसी असल के अधीन समझौते पाते रहे हैं। इसलिए मिसाल के तौर पर ध्यान दें

और उन्होंने (अर्थात बनू इस्राईल ने) मद्यानियों से लड़ाई की जैसा ख़ुदावंद ने मूसा को फ़रमाया था और सारे मर्दों को क़तल किया और उन्होंने इन मक़्तूलों के सिवा आदमी और रक़म और सूर और हूर और रुबा को जो मद्यान के पाँच बादशाह थे जान से मारा और बाऊर के बेटे बलअम को भी तलवार से क़तल किया और बनी इस्राईल ने मद्यान की औरतों और उनके बच्चों को कैद किया और उनके पशुओं और भेड़ बकरी और माल और अस्बाब सब लूट लिया। (गिनती बाब 31, आयत 7-12)

हज़रत मसीह नासरी को (जो वह भी बनी इस्राईल में से ही थे) जबकि अपनी ज़िंदगी में हुकूमत नसीब नहीं हुई और न जंग-ओ-जिदाल के अवसर पेश आए जिनमें उनका तरीक़ अमल ज़ाहिर हो सकता। परन्तु उनके कुछ फ़िक़्रों से अंदाज़ा किया जा सकता है कि शरीर और बद बातिन दुश्मनों के विषय में उनके क्या ख़्यालात थे। इसलिए अपने दुश्मनों को सम्बोधित करके हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "हे साँपों! साँपों के बच्चों तुम जहन्नुम की सज़ा से क्योंकर बचोगे?" (मती बाब 23 आयत 33)

तौरात की वर्णित तालीम के बाद क़ुरआन-ए-मजीद में माल-ए-ग़नीमत को अपनी तहवील में लेकर उसे इस्तिमाल करने में कोई आरोप बाक़ी नहीं रहता। (...........शेष आगे)

☆ ☆ ☆

मानवता की सेवा और जमाअत अहमदिया

शाह हारून सैफी, मुबल्लिग़ सिलसिला

शब्द "इन्सान" अरबी शब्द "उन्स" का द्विवचन है जिसका अर्थ है "दो मुहब्बतें"। अर्थात जब किसी व्यक्ति में दो मुहब्बतें एक अल्लाह की मुहब्बत और दूसरी उसकी सृष्टि की मुहब्बत इकट्ठी हो जाती है तब वह व्यक्ति वास्तव में इन्सान कहलाता है। इन्सान की उत्पत्ति का उद्देश्य मानवता की सेवा और उसका उद्धार है अपितु केवल अल्लाह की इबादत या भक्ति के लिए फ़रिश्ते ही काफी थे जैसा कि प्रसिद्ध कवि ख़्वाजा मीर दर्द लिखते हैं कि:-

दर्द-ए-दिल के वास्ते पैदा किया इन्सान को
वरना ताअत के लिए कुछ कम न थे करों बयां

और यही मानव जीवन का उद्देश्य है कि जहाँ वह अल्लाह की इबादत से उसे प्रसन्न करे वहीं मानवजाति की सेवा करके दोनों मुहब्बतों को प्राप्त करने का प्रयास करता रहे। मानव जीवन के इसी उद्देश्य के अनुस्मारक और स्थापना के लिए अल्लाह तआला प्रत्येक युग में अपने नबियों और अवतारों को प्रकट करता है। अत: हज़रत राम अलैहिस्सलाम, हज़रत कृष्ण अलैहिस्सलाम, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अर्थात समस्त नबी और अवतार इसी उद्देश्य की स्थापना के लिए प्रकट हुए हैं। इसी प्रकार वर्तमान काल में अल्लाह तआला ने इस उद्देश्य के अनुस्मारक हेतु हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम को प्रकट किया। आप अलैहिस्सलाम का समस्त जीवन मानवजाति की सेवा और उसके कल्याण के लिए समर्पित था और आपने अपने पवित्र जीवन का एक एक पल मानवजाति की सेवा में व्यतीत किया। अत: आप अपने जीवन उद्देश्य का वर्णन करते हुए फरमाते हैं:-

मेरा मतलूब व मक़सूद व तमन्ना खिदमत-ए-ख़ल्क़ अस्त
हमी कारम हमी बारम हमी रसमम हमी राहम

अर्थात मेरे जीवन का अर्थ और उद्देश्य और इच्छा मानवता की सेवा है यही मेरा कार्य है यही मेरा कर्तव्य और ज़िम्मेदारी है यही मेरा मार्ग है।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने 1889 ईस्वी में अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत की स्थापना की। इस पवित्र जमाअत में उपस्थित होने के लिए आपने अपने अनुयायियों के लिए 10 शर्तों का गठन किया जो दस शरायत-ए-बैअत के नाम से प्रसिद्ध हैं। अत: उनमे चौथी शर्त आपने यह रखी कि:-

"सामान्य रूप से सम्पूर्ण मानव-समाज और विशेषकर मुसलमानों को अपने तामसिक आवेगों के समय किसी प्रकार का अनुचित कष्ट नहीं पहुँचाएगा, न वाणी से, न हाथ से, न किसी अन्य प्रकार से''।

(इश्तिहार तक्मील-ए-तब्लीग़ 12 जनवरी सन् 1889 ई.)

इसी प्रकार नौवीं शर्त का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि:-

"प्रभु की समस्त सृष्टि के प्रति सहानुभूति में केवल मात्र अल्लाह तआला के लिए लगा रहेगा और यथासम्भव अपनी ईश्वर प्रदत शक्तियों और वरदानों से मानव समाज को लाभ पहुँचाएगा"।

(इश्तिहार तक्मील-ए-तब्लीग़ 12 जनवरी सन् 1889 ई.)

इसी प्रकार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि:-

"हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखो कि कितनी अधिक सेवाओं में जीवन व्यतीत किया और हज़रत अली र.अ. की हालत को देखो कि इतने पैवन्द लगाए कि जगह न रही। हज़रत अबु बक़र र.अ ने एक बुढ़िया को सदैव हलवा खिलाना अपना स्वभाव बना रखा था। ग़ौर करो कि यह कितना अधिक प्रबन्ध था। जब आपकी मृत्यु हुई तो उस बुढ़िया ने कहा कि आज अबु बकर कि मृत्यु हो गई उसके पड़ोसियों ने कहा कि क्या तुझको इल्हाम हुआ या वह्यी (देव वाणी) हुई? तो उसने कहा कि नहीं आज हलवा लेकर नहीं आया इसलिए ज्ञात हुआ कि मृत्यु हो गई। अर्थात जीवन में सम्भव न था कि किसी स्थिति में भी हलवा न पहुँचे। देखो कितनी अधिक सेवा थी। ऐसा ही सबको चाहिए कि मानवता की सेवा करे।

(मलफ़ूज़ात जिल्द 3 पृष्ठ 369-370)

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम सदैव मानवता की सेवा में लीन रहते थे और कोई अवसर मानवता की सेवा का हाथ से न जाने देते थे आपकी पवित्र जीवनी ऐसे उदाहरणों से भरी पड़ी है। उनमे से कुछ उदाहरण प्रिय पाठकों की सेवा में उपस्थित हैं।

गांव देहात की औरतें एक दिन बच्चों के लिए दवाई इत्यादि लेने आईं। हुज़ूर उनको देखने और दवाई देने में व्यस्त रहे। इस पर मौलवी अब्दुल करीम साहब ने कहा कि हुज़ूर यह तो बड़ा कष्टमय कार्य है और इस प्रकार हुज़ूर का बहुमूल्य समय व्यर्थ हो जाता है। इसके उत्तर में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:-

"यह भी तो वैसा ही धार्मिक कार्य है। यह ग़रीब लोग हैं यहाँ कोई अस्पताल नहीं। मैं इन लोगो के कारण हर प्रकार की अंग्रेज़ी और यूनानी दवाएँ मँगवा रखता हूँ जो समय पर काम आ जाती हैं। यह बड़े पुण्य का कार्य है। मोमिन को इन कार्यों में आलसी और लापरवाह नहीं होना चाहिए।''(मलफ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 308)

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम के ह्रदय में मानवता की सेवा का जो सागर ठाठे मारता था उसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि:-

"मेरी तो यह स्थिति है कि यदि किसी को दु:ख होता हो और मैं नमाज़ में व्यस्त हूँ। मेरे कान में उसकी आवाज़ पहुँच जाए तो मैं यह चाहता हूँ कि नमाज़ तोड़ कर भी यदि उसको लाभ पहुँचा सकता हूँ तो लाभ पहुँचाऊ और जहाँ तक सम्भव है उस से सहानुभूति करुँ। यह नैतिकता के विरुद्ध है कि किसी भाई के दु:ख और तकलीफ़ में उसका साथ न दिया जाए। यदि तुम उसके लिए कुछ भी नहीं कर सकते तो कम से कम दुआ ही करो। अपने तो एक तरफ मैं तो कहता हूँ कि गैरों और हिन्दुओं के साथ भी ऐसी नैतिकता का उदाहरण दिखाओ और उनसे

सहानुभूति करो। क्रोधित स्वभाव नहीं होना चाहिए"। (मलफ़ूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 82-83)

बिना भेदभाव धर्म, जाति या रंग व नस्ल समस्त मानवजाति की सेवा करने के सम्बन्ध में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम अपने अनुयायियों को सम्बोधित करते हुए फ़रमाते हैं:-

"अत: तुम जो मेरे साथ सम्बन्ध रखते हो, याद रखो कि तुम हर व्यक्ति से चाहे वह किसी धर्म का हो सहानुभूति करो और बिना भेदभाव हर एक से नेकी करो क्योंकि यही पवित्र क़ुरआन की शिक्षा है"।

(मलफ़ूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 219)

आपके एक अनुयायी मुफ़्ती मोहम्मद सादिक़ साहिब वर्णन करते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलम फ़रमाते थे कि:-

"हमारे बड़े सिद्धान्त दो हैं पहला ख़ुदा के साथ सम्बन्ध साफ़ रखना दूसरे उसके बन्दों के साथ सदभाव और नैतिकता का व्यवहार करना"। (ज़िक्र-ए-हबीब पृष्ठ -180)

इसी प्रकार आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:-

"हमारा यह सिद्धांत है कि सभी मानव जाति से सहानुभूति करो। अगर एक व्यक्ति किसी पड़ोसी हिन्दू को देखता है कि उसके घर मे आग लग गई और यह नही उठता कि आग बुझाने में मदद दे तो मैं सच सच कहता हूँ कि वह मुझसे नही है। अगर एक व्यक्ति हमारे अनुयायियों में से देखता है कि एक ईसाई की कोई हत्या करता है और वह उसे छुड़ाने के लिए मदद नहीं करता तो मैं तुम्हे सही कहता हूँ कि वह हम में से नही है।" (सिराज-ए-मुनीर पृष्ठ 28)

वर्तमान काल में अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत और मानवजाति की सेवा

वर्तमान काल में अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम की पवित्र शिक्षानुसार और आपके पाँचवे ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के नेतृत्व में निरन्तर मानवजाति की सेवा और कल्याण में व्यस्त है।

अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत आज समस्त विश्व में सैंकड़ो स्कूलों, यूनिवर्सिटीज, अस्पतालों, लंगर खानों इत्यादि के माध्यम से बिना किसी धर्म, जाति या रंग व नस्ल के समस्त मानवजाति की सेवा में प्रयासरत है। इसी प्रकार विश्व के 200 से अधिक देशों में स्थापित अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत की संस्था Humanity first प्राकृतिक आपदा और मानवजाति के प्रत्येक दु:ख, तक़लीफ़ के समय सदैव प्रथम पंक्ति में नज़र आती है।

अल्लाह तआला से दुआ है कि अल्लाह हम सबको मानवजाति की सेवा करने की शक्ति प्रदान करे। आमीन।

हैं लोग वही जहाँ में अच्छे
आते हैं जो काम दूसरों के

☆ ☆ ☆

सिलसिला अहमदिया (अर्थात अहमदियत का परिचय) जिल्द-1

(लेखक - हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब M.A.)

(भाग-31) अनुवादक – इब्नुल मेहदी लईक M.A.

पांचवां बड़ा कारण आप का वह जिहाद था जो आप इस्लाम की सेवा में दिन रात कर रहे थे। आपकी ये भक्तिपूर्ण सेवा बड़े से बड़े दुश्मन की ज़बान से भी ये शब्द निकलवाती थी कि यह व्यक्ति इस्लाम का बेमिसाल फ़िदाई और इस का आशिक़ है जिसे दिन रात इस्लाम की ख़िदमत के सिवा कोई ख़्याल नहीं। इस हालत को देखकर समझदार लोग एक गहरे फ़िक्र में पड़ जाते थे कि एक तरफ़ तो मिर्ज़ा साहिब उलमा की नज़र में काफ़िर और बेदीन हैं और दूसरी तरफ़ उन्हें इस्लाम का इस क़दर दर्द है कि बेदीन कहने वाले तो पड़े सोते हैं मगर मिर्ज़ा साहिब हर किस्म के आराम को अपने ऊपर हराम कर के इस्लाम की ख़िदमत में लगे हुए हैं। इस पर जो लोग सदप्रवृति थे वो मजबूर हो कर आपकी तरफ़ खिचे आते थे।

छठा बड़ा कारण वह नेक प्रभाव था जो आपने अपनी जमाअत में पैदा किया जिसकी वजह से आपका हर अनुसरण करने वाला ख़िदमते दीन का मतवाला हो रहा था। लोग देखते थे कि पहले एक इन्सान बेदीन और इस्लामी शिक्षाओं से हंसी - ठट्ठा करने वाला होता है लेकिन जैसे ही वह आपकी जमाअत में दाख़िल होता है वो एक दीनदार, ख़ुदा से डरने वाला, इस्लाम से मुहब्बत करने वाला, इस्लाम की तालीम पर दिली शौक़ से अमल करने वाला और इस्लाम की ख़िदमत में अपनी रूह की ग़िज़ा पाने वाला बन जाता है। इस नज़ारे को देखकर उनके दिल कहते थे कि ये पाक फल एक गंदे दरख़्त से पैदा नहीं हो सकता।

यह वे कारण थे जो आपकी सहायता में कार्य कर रहे थे मगर मुख़ालिफ़ भी ख़ाली हाथ नहीं था क्योंकि शैतान ने इस के हाथ में भी कुछ गोला बारूद दे रखा था। चुनांचे विरोध के मोटे-मोटे कारण यह थे :-

(1) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बहुत सी आस्थाएँ और विचार इस समय मुसलमानों की प्रचलित आस्थाओं के विरुद्ध थे। जैसे मसीह की वफ़ात का अक़ीदा, असल मसीह नासरी की बजाय किसी मसील मसीह का नुज़ूल, मसीह और मह्दी का एक ही होना, ख़ूनी और जंगी मह्दी से इनकार, तलवार के जिहाद की मनाही, अल्लाह के फरिश्तों के नुज़ूल की व्याख्या, दज्जाल की व्याख्या इत्यादि-इत्यादि। इन मतभेदों के कारण जनता आपको इस्लाम का गद्दार और दीन में एक नई राह निकालने वाला ख़्याल करते थे और आपकी बातों पर कान धरने के लिए तैयार नहीं थे।

(2) मुसलमान उलमा का ये फ़तवा कि आप काफ़िर और दायरा इस्लाम से ख़ारिज हैं और आपसे किसी प्रकार का संबंध रखना जायज़ नहीं, लोगों के लिए आपको स्वीकार करने के रास्ते में एक भारी रोक थी।

(3) आपकी कुछ भविष्यवाणियों में वो बादल का सा साया जो ख़ुदा की ओर से एक इबतिला और आज़माइश के तौर पर रखा जाता है और भविष्यवाणियों के पूरा होने की कसौटी में मतभेद जो आपके और आपके विरोधी उलमा में पाया जाता था वो भी लोगों के लिए एक रोक था। यानी आप यह फ़रमाते थे कि चूँकि ख़ुदा की रहमत उस के ग़ज़ब पर ग़ालिब है इसलिए तौबा और इस्तिग़फ़ार से अज़ाब टल जाता है और इसीलिए वईद

(अज़ाब) की भविष्यवाणियाँ कई बार जबकि दूसरा फ़रीक़ डर कर चुप हो जाए, टल जाया करती हैं और आप दूसरे नबियों के हालात में उनकी मिसालें भी देते थे मगर आपके मुख़ालिफ़ ये कहते थे कि नहीं बल्कि वादा हो या वईद जो भी किसी पेशगोई के शब्द हों वो हर हाल में अपनी ज़ाहिरी सूरत में पूरे होने चाहिएँ।

(4) आपको मानने से एक कठिन और क़ुर्बानियों से भरा हुआ जीवन व्यतीत करना पड़ता है जिसके लिए इस ज़माने के मुसलमान और दूसरे लोग तैयार नहीं थे।

(5) वो प्राकृतिक घृणा जो हर नए सिलसिले के बारे में हुआ करती है वो आपके सिलसिला के बारे में भी काम कर रही थी।

इन कारणों के चलते आपकी जमाअत की तरक़्क़ी की रफ़्तार आरंभ में धीमी थी और एक खींचा-तानी की सी अवस्था उत्पन्न हो रही थी। मगर फिर भी बावजूद ख़तरनाक मुख़ालिफ़त के आपकी जमात आहिस्ता-आहिस्ता क़दम-बा-क़दम (मगर इस तरह कि हर अगला क़दम पिछले क़दम के मुक़ाबले किसी क़दर तेज़ उठता था, कामयाबी की चोटी की तरफ़ चढ़ती चली जा रही थी। ये एक अजीब नज़ारा था कि मुख़ालिफ़त की ताक़तें जमाअत अहमदिया को ज़ोर के साथ नीचे खींच रही थीं। ख़ुदाई इबतिलाओं के बादल भी उन पर बाज़-औक़ात अंधेरा कर देते थे और कभी-कभी उनकी अपनी कमज़ोरियों से भी उनका सांस फूलने लगता था। मगर इंच इंच, चप्पा चप्पा उनका क़दम ऊपर उठता जा रहा था। और जिस तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दिल बदर की जंग में, जो इस्लाम और कुफ़्र की मौत और हयात की जंग थी, आपके सीने में उछलता और गिरता था और आप बेचैन हो-हो कर ये दुआ कर रहे थे कि "ए मेरे आक़ा अगर आज ये छोटी सी जमाअत इस मैदान में हलाक हो गई तो फिर विश्व पटल पर तुझे पूजने वाला कोई नहीं रहेगा। इसी तरह इस ज़माना में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दिल अत्यंत बेचैनी और तकलीफ में ख़ुदा की रहमत के हाथ की तरफ़ देख रहा था कि वो कब आपकी तरफ़ लंबा होता है।

इस जगह यह वर्णन भी ज़रूरी है कि उस वक़्त तक जमाअत अहमदिया की संख्या लगभग तीस हज़ार तक पहुंच चुकी थी और यह संख्या सिर्फ़ पंजाब तक सीमित नहीं थी बल्कि हिन्दोस्तान के विभिन्न भागों में पाई जाती थी। जैसे सूबा सरहद, कश्मीर, यूपी, बंबई, हैदराबाद दक्कन, मद्रास, बिहार, बंगाल इत्यादि में जमाअत क़ायम हो चुकी थी और हिन्दोस्तान से बाहर भी पूर्वी अफ़्रीक़ा में अहमदियत का ख़मीर पहुंच चुका था और ख़ाल-ख़ाल अहमदी अरब इत्यादि देशों में भी पाए जाते थे और इस प्रकाशन का कारण अधिकतर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकें थीं और दूसरे दर्जा पर आपके निष्ठावान लोगों की तब्लीग़ी कोशिशें भी इस में सहायक हुई थीं जिनमें से हर व्यक्ति एक जोश से भरे हुए मुबल्लीग थे।

मुक़द्दमा दीवार और दीवार का गिराना : हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरुद्ध जो मुख़ालिफ़त का तूफ़ान बरपा था उस का एक पक्ष यह भी था कि आपके मुख़ालिफ़ीन ने आपके कुछ रिश्तेदारों को उकसा कर उन्हें भी मुख़ालिफ़त में खड़ा कर दिया था। ये लोग अपनी बेदीनी और बदअख़्लाकी के कारण वैसे भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ थे लेकिन मुख़ालिफ़ों ने उन्हें उकसा-उकसा कर और भी ज़्यादा तेज़ कर दिया था। उनमें से दो आदमी अर्थात मिर्ज़ा इमामुद्दीन और मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन

साहिबान कष्ट पहुँचाने में खासतौर पर आगे बढ़े हुए थे। यह दोनों सगे भाई थे और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के चचा के लड़के थे मगर बावजूद इस संबंध के उनके दिलों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुश्मनी की आग शोला-ज़न थी और वो कोई मौक़ा आपको दुख पहुंचाने का व्यर्थ नहीं जाने देते थे और चूँकि उनका मकान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मकान के साथ जुड़ा हुआ था और वैसे भी उन्हें क़ादियान में संपत्ति के अधिकार प्राप्त थे इसलिए उनका वजूद मानो एक आस्तीन के साँप के समान था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन्हें कभी तकलीफ़ नहीं दी बल्कि हमेशा एहसान और प्रेम का व्यवहार किया मगर बावजूद इस के उनकी मुख़ालिफ़त दिन-ब-दिन बढ़ती ही गई। अंतत: 1900 ई० में उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आपके अनुसरण वालों को तंग करने की यह तदबीर निकाली कि अत्यंत ज़ुल्म और ज़बरदस्ती के साथ इस रस्ता को दीवार खींच कर बंद कर दिया जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमान ख़ाना और आपके घर और मस्जिद को मिलाता था। इस शरारत ने कादियान के ग़रीब अहमदी मुहाजिरीन पर उनका शांतिमय मार्ग तंग कर दिया क्योंकि अब उन्हें मस्जिद में आने और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मिलने के लिए क़स्बा के अंदर एक बड़ा चक्कर काट कर पहुंचना पड़ता था और ऐसे हिस्सों में से गुज़रना पड़ता था जो सिलसिला के घोर शत्रुओं से आबाद था। आख़िर मजबूर हो कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को क़ानूनी कार्रवाई करनी पड़ी। और आपकी ज़िंदगी में यही एक अकेली मिसाल है कि जब आप किसी के ख़िलाफ़ मुद्दई बने। आप अब भी इस पोज़ीशन में नहीं आना चाहते थे मगर वकीलों का ये मश्वरा था कि चूँकि ये रस्ता ख़ानदान का प्राईवेट रस्ता है इसलिए आपके सिवा किसी और शख़्स को क़ानूनी कार्रवाई का हक़ नहीं पहुंचता। इसलिए मजबूरन आप को मुद्दई बनना पड़ा। आख़िर एक लंबे मुक़द्दमा के बाद अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को फ़तह दी और अदालत के हुक्म से यह दीवार गिरा दी गई। (सिलसिला अहमदिया, पृष्ठ 101-104)

एक सूक्ष्म बिंदु

अरब वालों में चूंकि 1000 से आगे गणना नहीं है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस पर फरमाया: इस से ज्ञात होता है कि उनका मैलान दुनियादारी की ओर नहीं था अन्यथा अन्य दुनियादार कौमों की तरह लाखों-करोड़ों तक गिनती वे भी रखते।

फिर वह पुस्तक सुनकर हजरत साहब ने प्रशंसा की कि अच्छी लिखी है और उचित उत्तर दिए हैं।

(मलफूज़ात जिल्द 3)

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES
INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

सामान्य ज्ञान (गूगल के माध्यम से)

- 3.8 बिलियन से अधिक लोग आज इंटरनेट का उपयोग करते हैं, जो दुनिया की आबादी का 40% है।
- हर मिनट में 570 नई वेबसाइट बनाई जाती हैं।
- गूगल पर प्रतिदिन 350 करोड़ से भी ज्यादा विभिन्न तरह के सर्च किए जाते हैं।
-यू ट्यूब पर हर मिनट में 24 घंटे के वीडियो अपलोड किए जाते हैं।
-प्रति मिनट 3,40,000 ट्वीट भेजे जाते हैं।
-फेसबुक पर हर दिन 30 करोड़ से अधिक तस्वीरें अपलोड की जाती हैं। प्रतिदिन 80 करोड़ लाइक्स और 17.5 करोड़ लव रीएक्शन भेजे जाते हैं।
-फॉन्ट बदलकर प्रिंटर की इंक बचाई जा सकती है।
-वर्तमान समय में दुनिया की 92 प्रतिशत करेंसी डिजिटल है।
-1995 से पहले डोमेन का रजिस्ट्रेशन मुफ्त था।
-ई-मेल का आविष्कार वर्ल्ड वाइड वेबसाइट (WWW) से पहले हो चुका था।

*** इंजीनियरिंग से जुड़े मजेदार तथ्य**

-इंजीनियर शब्द लैटिन शब्द इंगनेटर से आया है, जिसका अर्थ है चतुर यानी क्लैवर।
-सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया भारत के पहले इंजीनियर थे।
-एलिसा लियोनिडा इंजीनियरिंग में डिग्री प्राप्त करने वाली दुनिया की पहली महिला इंजीनियर हैं।
-भारत और दुनिया भर में पेट्रोलियम इंजीनियरिंग में सबसे अधिक सैलरी मिलती है। इसके अलावा, -पेट्रोलियम और केमिकल इंजीनियर की मांग भी अधिक है।
-मैकेनिकल इंजीनियरिंग को सबसे मुश्किल और कम्प्यूटर साइंस को सबसे आसान इंजीनियरिंग ब्रांच माना जाता है।

***मानव शरीर से जुड़े कुछ मज़ेदार तथ्य**

-मानव शरीर से हल्का-सा प्रकाश निकलता रहता है, जिसे आंखों से देख पाना संभव नहीं है।
-मनुष्य की नाभि में बैक्टीरिया की 67 अलग-अलग प्रजातियां पाई जाती हैं।
-मनुष्य के शरीर में हर साल लगभग 4 किलो त्वचा कोशिकाओं की मृत्यु होती है।
-बच्चे जब तक कम से कम एक महीने के नहीं हो जाते, तब तक वो आंसू नहीं बहाते हैं।
-वैज्ञानिकों का अनुमान है कि नाक एक खरब अलग-अलग गंधों को पहचान सकती है।
-मनुष्य एक मात्र ऐसी प्रजाति है, जो शर्माना जानती है।
-रक्त शरीर के वजन का लगभग आठ प्रतिशत हिस्सा होता है।
-मानव शरीर में इतनी रक्त वाहिकाएं है कि अगर सभी को जोड़ दिया जाए, तो इनसे पृथ्वी चार बार लपेटी जा सकती है।

☆ ☆ ☆

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ○
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ○
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE
At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ○
(النحل 11)
Prop : Sk. Ishaque
Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653
FFT
Fruits
FAIZAN FRUITS TRADERS
Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045
PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad
Mobile
09937238938
محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں
PRAN
MANGO
JUICEPAK
Marie
RUKSAR AGENCY
Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.
Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

R
REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal
flipkart.com
amazon.com
paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
DL
LEATHERS
Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

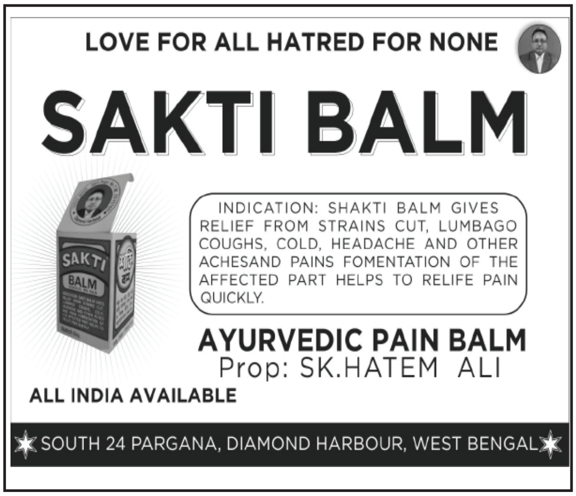
LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
SAKTI BALM
INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.
AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI
ALL INDIA AVAILABLE
SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
RSB Traders & whole seller
Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items
Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18
Mob: 9647960851
9082768330

INDIA MOVES ON EXIDE
M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)
Cell :9440996396,9866531100

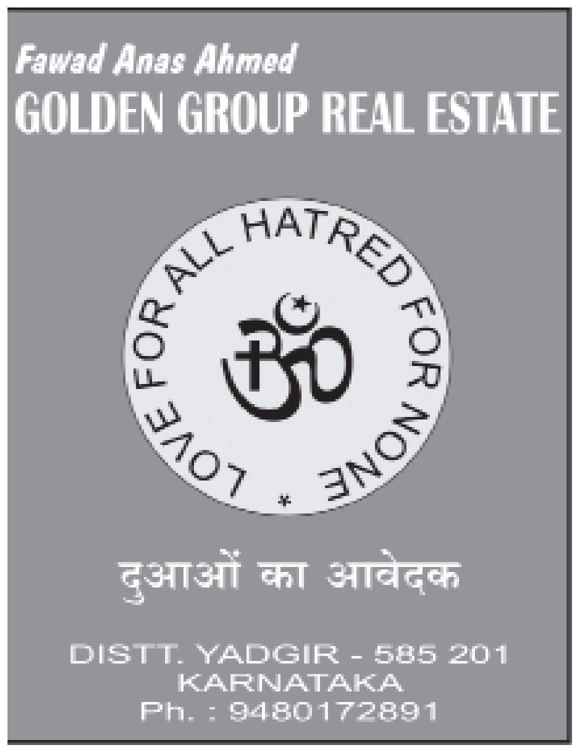
Fawad Anas Ahmed
GOLDEN GROUP REAL ESTATE
LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
दुआओं का आवेदक
DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

METRO PLASTIC PRODUCTS
YUBA
QUALITY FOOTWEAR
E-mail:yuba.metro@yahoo.com
(AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY)
H.O & FACTORY : 20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH :2328-1016

☎ : 06784-230727
Mob. : 9437060325

Is Allah not sufficient for HIS servant

JANATA
STONECRUSHINGINDUSTRIES

Mfg. :
Hard Granite Stone, Chips, Boulder etc.

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

At - Tisalpur, P.O. - Rahanja,
Distt. - Bhadrak - 756 111

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

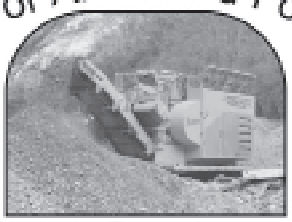

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا
(سورۃ بنی اسرائیل آیت 31)

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in
Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

कोई खूनी महदी नहीं आने वाला

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने क़ुर्आन और सुन्नत (हज़रत मुहम्मद साहिब का जीवन-चरित्र) के अनुसार मुसलमानों के सम्मुख जब यह मत रखा कि किसी 'ख़ूनी महदी' का आना इस्लाम धर्म की शिक्षा के विरुद्ध है और इस्लाम के प्रसार के लिए शस्त्रों की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि इस्लाम, धर्म को फैलाने के लिए मनुष्यों के ख़ून बहाने का घोर विरोध करता है, तो कट्टरवादी मुल्लाओं ने इस शान्ति के अवतार और मानवता के रक्षक पर काफ़िर, अधर्मी और इस्लाम धर्म से निष्कासित होने का आरोप लगाया। इस पर आपने कहा :-

'खेद है कि जब मैंने हिन्दुस्तान के मुसलमानों को यह ख़बर सुनाई है कि कोई ख़ूनी महदी या मसीह संसार में नहीं आने वाला, अपितु एक व्यक्ति सद्भावना के साथ आने वाला था, जो 'मैं हूँ', तब से ये नासमझ मुल्ला मुझ से द्वेष रखते हैं और मुझे काफ़िर कहते है और दीन (इस्लाम) से निष्कासित करते हैं। बड़ी विचित्र बात है कि यह लोग मानवता के रक्तपात से प्रसन्न होते हैं, परन्तु यह क़ुर्आन की शिक्षा नहीं है।

(तोहफ़ा-ए-कैसरिय: पृ. 13-14)